No ६१३३ पत्र २३२
२३२

No. १८६६ क

Title हिण्डोलराग: (स

Author

Extent २३० पत्र Age

Subject संगीत

6133

23x

Incomplete

ह॰रा॰
१

ॐ अथ हरष राग आरंभः। भरत मतेन॥ अेषा न्यास ग्रह विरज है संकीरण स्वर गाय। प्रथम याम दिन सरद रित हरष राग स्वर दाय॥ देवशाख वेलावली शुद्धमल्लार हि चीन सारंग गौंड मिलापते हरष प्रकट प्रस कीन॥ इस हरष राग का अेषा न्यास ग्रह षड्ज विरज स्वर है अरु येह संकीरण संज्ञा का राग है अरु प्रातः

१

काल इसका समय है अरु देवसाष वेलावली शुद्धम

लहार सारंग और गौंड के मिलाप में येह राग बन-

ता है अरु इसका ब्रह्मा देवता है ब्रह्मा हि ऋषि है अन

रूप छेद है हेबीज है स्वकीया नायिका है अरु अन

कूल नायक है अरु शृंगार रस है अरु इसका शरद

ऋतु है ॥ अथ हरष राग ध्यानम ॥ ओं आनंद वक्त्र:

ह॰रा॰ २

कर वक्र पमो नीलो बरो मौक्तिक माल कंठः रागा वगा

हे कृत चित केठो गौर पव हर्षः किल बाल हूपः ॥

अथ हरष राग भाषा ध्यानम ॥ कवित्त सवैया । आनन आनंद

मई पानन अरुन कंज नील पट ललित पहरे मृदु ।

गात है ॥ मुकतान माल कंठ राग अवगाहन मैं ।

लागयो मन कंठ कल लोकत सुहात है ॥ गौर गौर

२

बरन हरन छब मदन की बदन की जोती जो बरनि
किमि जात हैं ॥ ऐसो सिरु रूप राग हरष अनूप।
कह्यो हरषि गुनिन भूप गावत प्रभात हैं ॥ इसका
अर्थ ॥ प्रसन्न मुष वाला हाथ में लाल कमल नीले
वस्त्र मोती की माला धारन करी है कंठ में जिसने अ
रु राग में लगा हूआ है चित्त और कंठ जिसका गौरवर

ह॰ रा॰
२
३

ण बालक सरूप ऐसा हरष राग रागनियों करके गाया ‹

हुआहे ॥ अथ स्वकिया नायकालक्षणम ॥ दोहा ॥

जा॰
लौंवती निस दिन पगी निज पति के अनुराग कह

त स्वकीया सील मय ताको पति बड भाग ॥ यथा ॥

सोचि विरंचि निकाई मनो हर लाजतें म्हरति बेत‹

बनाई ॥ तापर तोबड भाग बडे अनुराग लसैं पति

२

प्रीति सुहाई ॥ तेरे सुशील सुभाव भटू कुल नारिन

कौ कुल कानि सिषाई ॥ तैही मनो पति देवता के

गुन गौरी सबै गुन गौरी पढाई ॥ अथ अनुकूल ना

यक लक्षणम् ॥ सवैया ॥ केहू नही बिसरै निसि वा

सर भेट हसी मुष चंद उज्यारी ॥ त्योंही दिपै अति

नेह सों देहकी दीप कली सम दीपति न्यारी ॥ तेरीये

ह॰ रा॰
४

जोति जगै हिय भीतर आवत और न राति अंध्यारी ॥

नैननहू अरु बैननहू तनहू मनहू को नही अति प्या

री ॥ अथ शृंगार रस लक्षणम । सवैया ॥ आन तिहा

री न आन कहो तन मैं कछु आनन आनही कैसो ।

केशव कान्ह सुजान स्वरूप न जाय कह्यो मन जैन

त जैसो ॥ लोचन सो मही पीवत जात समान सिहा

४

न अघातन तैसो ॥ जोनर हात विहात न मै वलिजा

न सुषात कहो नेक वैसो ॥ इति शृंगार रस लक्षणम्

अथ हरष रागस्य विनियोगः । अस्य श्री हर्ष राग मंत्र

स्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप छंदः ब्रह्मा देवता हे बीजं

मनो वांछित कामना सिद्धयर्थे हर्ष राग जपे विनियो- प्रीत्यर्थे

गः ॥ अथ हर्ष राग कर न्यासः ॥ ॐ हें अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥

ह॰ रा॰
५
5

एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात् ॥ अथ हरष राग मंत्रः
ॐ हें हर्षाय नमः ॐ ॥ इति मंत्रः ॥ अथ हरष राग पूजा
विधाय ॥ आवाहनं आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं वस्त्रं
यज्ञोपवीतं गंधं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दत्वा
पुनराचमनीयम् ॥ हर्ष रागस्य सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥
अथ जप संख्या ५..... ॥ हरष रागस्य देवता मंत्रः ॥

ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ ॥ अथ देवता ध्यानम । ॐ ब्रह्माणे
रक्त वर्णाभे पीत वस्त्रै रलंकृतम । चतुर्भुजे चतु
र्वक्त्रे स स्रुवं स्रुचि हस्तकम ॥ अब हरष राग येह
ठाठ है ॥ षड्ज सम रहता है ऋषभ चढा गंधार
उतरा मधम उतरा पंचम सम रहता है धैवत चढा
निषाद उतरा ॥ अथ हरष राग स्य सरगमः ॥

ह॰ ग॰ ६

6

सारेगमपधनिसानिधपगरेसानिधपनिसासारेग
गपधपमगरेसा ॥ इति अस्थाई ॥ मपनिसारेगरे
सानिसानिपमगरेसानिपनिसासारेमपधपधप॰
मगरेसारेगरेसा ॥ इति अंतरा ॥ अब इसकी गत ये

सां रे ग म पं ध नि सां नि ध पं
ह है ॥ डिढ डा डिढ डाडा ढाढा डा डिढ डा डिढ

म ग रे सां नि ध पं नि सां सां रे ग म पं
डा ढा डा डाढा डिढ डा डिढ डा ढा डा डा ढा डिढ डा

ध प म ग रे सां म प नि
डिड डा ढा डा डा ढा ॥ इतिप्रथमस्थाई ॥ डिढ डा डिढ

सां रे ग रे सा नि सा नि प म ग रे सां नि
डा ढा डा डा ढा डिढ डा डिढ डा ढा डा डा ढा डिढ

प नि सां सां रे म प ध मं ध पं म ग रे सां
डा डिढ डा ढा डा डा डा डिढ डा डिढ डा ढा डा डि

सं रे ग रे सां
ढ डा डिढ ढा डा ॥ अंतरा ॥ अथ यास्याप्रलापः ॥

२म २प २नि २ध २प २म २ग २रे २म २प २ध २प
ननरी इना आननन उनन उआनन अदतननरी न

२म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २रे २सं
ने तना उनननना आनरा ननन रन नानम ॥

ह॰ गा॰ ७

इति स्थाई । अथ अंतरा ॥ ननन अदनने आनन

नुम् तानुनै नना नन नरी नना आन नान ननुम

ननु नरीन तानुरी रना नना आन नान आन नान

नान तानुम ॥ अथ ध्रुवपद गानै माह ॥ राग ह

रष ताल । ४ ॥

७

अथ हरष राग ब्रह्म परिछेद माह झवपद

२प २प २म २ग २रे २सं २रे २सं १नि २सं २नि २प १नि

ताल चार ॥ श्री अनंत ब्रह्म विभु जलथ

२सं २रे २म २प २नि २प २म २रे २सं २म २प २प २नि २सं

ल नभ व्यापरहो रमहि लेत सकल जगत

२प २प २म २ग २रे २सं २म २प

अव्याय भाव भारी ॥ इति अस्थायी ॥ वका

२नि २सं २नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २म २रे २सं

जिह्व वर्णन कर वेदवाणि विस्तर गुनहा

१नि २सं २ग २प २प २नि २सं २प २प २म २ग २रे २सं

रियाहि मौन रहे सौइ अलख भारी ॥ इति

ग॰ ह॰ चेतरा ॥ शोभा शाश्वत्य होइ मन मन थाकि ।

मोर रहे दशा नहि देषसके इंद्रिय ब्रतिचारी

तेहि आदि तेहि अंत मध्य तेहि ज्ञानगम्यमृ

षा मे हे मजिम भिन्न नाम धारी ॥ इत्याभोगः

राग हर्ष ध्रुवपद बल के ताल चार था:

जय जय जय जगन्नाथ तेरी येह केलि॰

रवी विविध भांत जगाति जगात निज निज

परवारी ।। इति अस्थायी ।। अंत्र में जो जीव

होत होय अंत्र करण हारि जंत्र में जंत्र हो-

यिहोत यज्ञ कर्म सारी ।। इति अंतरा ।।:

वेद में जु कर्म होत वेद तवहि वाक्य कहे

अंतर तहिं माया तहि सप्त स्वर धारी ।।:

रा॰ ह॰ कारण नहिं कार्य नहिं कर्त्ता कारयिता न

हिं फलहि नहिं भोक्ता नहिं माया विला

सी ॥ इत्याभोगः ॥ इति हर्ष राग ख्याल परि॰

च्छेदः ॥ ॰ ॥

अथ हर्ष रागस्य शक्ति परिच्छेद माह ध्रुव

ध प नि सां ग रे सां

पद ताल चार ४ ॥ गाव लोक हुडा मणि

ग रे ग म ग रे सां प ध नि सां नि सां ग रे म

श्री राया आदि शक्ति कोटि वेदभाव प्रका

ग नि प म रे सां म

श नीलांबर भराणी ॥ इति अस्थायी ॥ श्या

ध नि सां रे ग रे सां ध प म ग रे सां

म मंदिर मध्यवर्ति विद्युत जिम चमकर

ग म प ध नि सां नि प म रे

ही है इंद्र धनुष श्याम धाम मोहन मन हर।

रा॰ ह॰

णी ॥ इति षेतरा ॥ अथो धनुः विशिष नेत्र

श्रसि कटाक्ष वेणि पाश वक्र कुंतल मनुः

षेकुशादि धरणी ॥ जगत जिस प्रान सेः

कल जेगम तत प्रतन धरे बालनियी श्र

वरज भये दोउ चरण मरणी । इत्याभोगः

राग हर्ष ऋवपद प्राक्ति ताल चार । ५ ।

श्री राधा परम शक्ति करुणा कर एरही

कमल मन विहारिनि नित दुःख हर कर

नी ॥ इति अस्थायी ॥ अति उज्जल नयन

न कर जीत लीन विजन युग छीन मी

न गुणहि कंज मृग हग मद हरिनी ॥

इति अंतरा ॥ नासा कर तिल प्रसून ष

ग॰ म॰ कुग्रादिक मंदकीये पिकवाणी जीत ॥ ३ ॥

दंत दाडिमनिभ घरनी ॥ बालनिधी ख

म लता भ्रेगन म्रुड जीत लई भूषण की

चमक चपल चलन मान हरनी ॥ ४ ॥

इत्याभोगः ॥ ४ ॥ इति हर्षरागस्य शास्त्रिप

ति छेदः ॥ ४ ॥

अथ हर्ष रागस्य गणेश परिछेद माह झवप

द ताल चार ४ ॥ एक रदन वदन सुभगान

एक सुख वाहन युत मंदित अरुण कुसुम

न कर ईप्सित फल दाता ॥ इति अस्थायी ॥

गिरजा सुत गणनायक गुण गण गिरदा

इक वर वरन वरन निपियन नित निज

रा० ह०

12

भक्तन याना ॥ इति षेनरा ॥ सिंधुर वन वर्ण

कर्ण वर गजेंद्र षेड दंडवक्र कीयो वक्र मो

क मोद कविघ साना ॥ बालनिधी चरणां

बुज मनवाग धारणा हित षटपद वन धा

न धरो सकल सव वियाना ॥ इत्याभोगः ॥

राग हरष फवपद गणपति ताल चार ध

को

बिघन पर हर करण हरण श्रविन सिमर

जाम श्राम पाम रिढ सिढ एकदंत धारी।

इति श्रस्थायी॥ कर अंकुश परशुदंत मोद

क भर पाचलियें किये बदन सिंदुरयुत·

ईंड भाल धारी॥ इति अंतरा॥ शिरकने

र कुशाम किरैं अंकर दल सुरभि कमल

ग. ह.

13

धार गरहि मक्रमाल भाल तिलक भारी ॥

चरण शरण बालनिधी दयानिधे दानदेउ

बुद्धि ह्रद्धि सिद्धि सकल विकल तापहारी

इत्याभोगः ॥ इति गणेशपरिच्छेदः ॥ ः ॥

अथ शिवपरिछेदमाह राग हरष फरवप

प पि म ग रे सि रे सि

द ताल चार ध ॥ श्री शंभ शुद्ध फटिक ।

प नि सि रे म प नि प म रे सि प प नि सि

निर्म्मल वन वर्ण जास तीन नेत्र भालचंद

प धि पि म ग रे सि म प नि

सीस गंग धारी ॥ इति स्थायी ॥ पंचानन

सि रे ग रे सि जा नि पि म रे सि प प

नील ग्रीव गिरिपति दशाहि भुजा कर त्रि

नि सि प पि म ग म ग रे सि

शूल डमरु लियें नटत वरण चारी ॥ इति

ग॰ ह॰ खेतग॥ आद नाद रचन हेत डमरु में सुर

कीये आई उण इक झल्लक पुन ध्वोड॰का

री॥ धैवत हय ववट लण जमड॰न स वि

चारी नम नामा अपर क्रमनचडयष्ण अ

यि कारी॥ जब गडद शंकर हि पुनः व

फै छटप मारलीन चट नव कण्य अक

ट कीयो शीष सर हल मारी ।। बालनिधी

शब्दबल नाद रूप अति पवित्र जोउथरे

उर प्रकाश मोत रूप भारी ।। इत्याभोगः

राग हरष ध्रुवपद ताल चार शिवजी ।।

करुणा निधि शंकर विश्व व्याप रहो स

कल जगत अति विरक्त देह टिक रखा।

गा. ह.

मन विचारी ॥ इति अस्थायी ॥ आत्म रूप हरि

अभिन्न जान दीयो अई देह अई दीयो पार्वति

तिया वाम अंग मारी ॥ इति अंतरा ॥ गंगाधा

र अघियाई इंड किरण वेद भई डमरू वि

नत वाय भये भोगि वितल वारी ॥ ईश्वर

ता तान मकल महाराज न्रपहिं दई मिता

टन पात्र बालनिधी करहि कारी ॥ इति आभोगः ॥ इति हरष रागस्य शिवपरिच्छेदः ॥ ॥ ॥

ཀ་རྲ་

16

अथ विस्नु परिछेद माह राग हरष ध्रुवप

२पं २ध २नि २सं २सं २ध २पं २म

द ताल चार ४॥ बारद इति रमानाथ पी

२ग २रे २सं २ध २नि २सं २रे २म २पं २ध २म २पं

त बसन धारी मणि गण युत क्रीट मुकट

२ग २रे २सं २ग २म २रे २सं २म २पं

झलकत अति भारी॥ इति अस्थायी॥ ग्रौव

२ध २नि २सं २नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि २ध २पं

चक्र गदा पद्म पानि भुजा मंड विशाल।

२म २ग २रे २सं २ध २नि २सं २ग २म २पं २म २रे २सं

शृंगार मणि अति उजारि गरुड युजाजारी

रा.ह.

इति श्रेतरा ॥ बन माला चरण छुहे गोपि मे
ग लपट रहे देषरमा ईर्षति येह रमाहि ले
न मारी ॥ सापत्नी शुनि हिं क्लेश वालनि
ये दीजो निज पैमोही प्रेम नेम सकल ।
जग विहारी ॥ इति श्राभोगः ॥ राग हरष
विसजी ध्रुवपद ताल वार ४ ॥ रमानाथ

17

जगन्नाथ देवनाथ भक्तनाथ विश्वंभर विश्व

रूप विश्वपती धारी ॥ इतिध्रुवस्थायी ॥ संक

ल विश्व व्यापि करण सात्विक वपु धारयरहो

मेघश्याम वर्ण नाम शोभित रूप भारी ॥ः

इति ध्रुवंतरा ॥ नीरगनिधे भजन धायन रत

न जडत मुकट सीस मकराकृत कुंडल।

गा॰ हृ॰ युत वदन झलक कारी ॥ बाल निधी बारि

18

द जिम चपला युत शोभि रहो लक्ष्मीक

र वरण जैसै योगि उर विहारी ॥ इत्याभो

गः ॥ इति विस्व परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖

अथ सूर्यपरिच्छेदमाह राग हरष ध्रुवपद

ताल चार ४ ॥ मिहर कण वर्ण कर्ण कुं

डल मंडित विभ्र ग्रात्म जगत तिमर हर

ण मुकुट त्रिकुट धारी ॥ इति प्रस्थायी ॥

जिह मंडल ग्रति प्रचंड खिराहि दंड मोद

करण नाप हरण चक्रवाक नाक सोवा

रा॰ह॰ विसारी ॥ इतिश्रेतरा ॥ करहि कमल कोमल
कृत केज केलि गेय युक्त मयुपराग भृंग पु
न लख मन विकारी ॥ बालनियी टीजो नि
त पमोहा प्रेम नेम पाट पत्र रमहि मयुप
अपर रहे जारी ॥ इत्याभोगः ॥ राग हरष
प्रवपद सुयेजी नाल चार ४ ॥ भास्कर ने

हि विश्वपति विश्वनेत्र विश्वधर्म विश्वकर्म

फलनिदान परम मोदकारी। इतिस्थायी॥

सकल लोक जलमंडन तव शोत शेक वे

द भौम बुधहि गुरु भृगु सौरि सारी। इति

अंतरा॥ जबहि रजिनी भांतिपरें तेरिकला

धार रहें रेह सकल ताप जगत पेसो हित॥

ग॰ह॰ कारी ॥ विश्वकीये पुण्य पाप जन्य फलवि

चारण हित बालनिधी ज्योति रूप प्रकट

वक्र भारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति सूर्य परिच्छे

दः ॥ ॥ ॥

अथ दशावतार परिछेदमाह राग हरष ध्रु

२सा १ध २नि २सा २रे २सा १ध १प

वपद ताल चार ५ ॥ जगत पाल जगतपति

१ध २नि २सा २रे म २प २नि २प म २रे २सा

जगत नाम जास जपी जग जग जब जगति

२रे २प २म २ग २रे २सा २म

हूष काटन तनु धारी ॥ इति अस्थायी ॥ म

२ध २नि २सा २रे ३ग ३रे २सा २नि २प २रे २सा १प १ध

च्छन राजा हित मत्स्यरूप रक्ष करी कच्छ

१नि २सा २रे २ग २म २ग २रे २सा

प रूप पीठ गिरिवर धारि मथा कारी ॥ इति

ग.ह. श्वेतरा ॥ क्रोड वदन भूमि उधरि नरहरि अव
र उदरहिं फरयारि भूमि बलिहिराय वामन
वपु धारी ॥ परशुराम मार हलो रामचंद्र
मेलकहो बाल सबल हलहियलो बुद्ध
कलकि मारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति हरष रा
गस्य दशावतार परिच्छेदः ॥ ॥ ॥ ॥

२)

अथ मधु रागस्य दशावतार परिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ प्राफपक प्रति वि

चित्र मत्र प्रेजलि प्रान परी देष क्रोडि मध्य

धरी बृह्म होई भारी ॥ इति स्थायी ॥ सत्य

ब्रत रक्ष करी मत्स्य रूप धर्यो हरि कछ

प हो अब्धि मथन मंदिर गिरि धारी ॥ २

ग॰म॰

२८

तिहेतरा ॥ हैम नेत्र ग्यान हरि सूकरहो भू

मिधरि प्रहलाद रतन हित श्री न्रसिंह जा

री ॥ बामन बलि भूमि लई परशुराम ब

त्रक्षत्री रावण कौं हन्यो राम सेत बंध का

री ॥ राम कृस्न नानाविध चरित करै कंस

हन्यो बुद्ध बुद्धि असुरन की भ्रष्टमत उचा

री ॥ बालनिधी जबहि जगत कलिमषक
लि धर्म धरै निष्फलके होय भार भूमिको
निवारी ॥ इतिआभोगः ॥ इति दशावतार॰
परिछेदः ॥ ०:० ॥

ग·म·

23

६२

राग मधु ताल चार मौज करि गुरुदेवदया

करि शास्त्र सुनाय कह्यो हरि मेरो॰ ज्यौं रवि

के प्रकटे निशि जात सुहारि कियो भ्रम मो

नि अंधेरो॰ कायक वाचक मानसहू करि

कैं गुरुदेवहि वंदन मेरो॰ सुंदर दास कहै

कर जोरि जु दादू दयाल कौ हूं नित चेरो॥

रा॰ म॰

24

राग मधु ताल चार॰ पूरणब्रह्म विचार नि
रंतर कामन क्रोधन लोभन मोहे॰ श्रोत्र
त्वचा रसना अरु घ्राण सदेवि कहू कहू
नैनन जोहे॰ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपण
जास गिरा सुनिमो मन मोहे॰ सूरदास॰
कहै करजोरि ज दाह दयालाहि मोरनमोहे॰

राग मधु ताल चार॰ धीरजवंत श्रुतिमानि

तैंइद्रिय निर्मल ज्ञान गह्यो हढ ग्राह॰ सी

ल संतोष क्षमा जिनके वटलागि रह्यो।

संग्रनाह दनाह॰ भेषत पत निरंतरल

ल जे श्रौर नही कछु बाद बिबाह॰ ये सब

लछन हैं जिन मांहि सु सुंदर के उर हैं ग्र

ग॰ म॰ ह दाउ॰ राग मधु ताल चार॰ भौ जलमें बहि

जातहुते जिन काढि लिये अपने करि आउ॰

और सेदेह मिटाइ दियो सब कानन टे

रि सुनाइकें नाउ॰ प्राणबल प्रकाश कि

यो पुनि छुटि गयो येह बाद विवाउ॰ प्रे

मी कृपा जु करी हम उपर संदरके उरहै

25

गुरु दाऊ । राग मध्य ताल । कौउ कहे गोरष कौ

गुरु थापत कौउ कहत दिगंबर आउ ।

कोउ बकेथ कोउ भरथर कोउ कबिर कौ

गावत नाउ । कोउ कहै हरिदास हमारे

जुयों करि ठानत बाद बिवाउ । और तो

संत सबै सिर ऊपर सुंदर के उर है गुरु दा

26

रा॰ म॰ ३॰ राग मधु ताल चार। कौतु विभूति ज

टा नावधारि कैहे येह भूप हमारो ही आउ॰

कौउक कान फिराइ फिरेप्रति कोउकसो

गी बजावत नाउ। कौउक केशलवाई

कौतूहल कोउक जंगम के शिव बाउ। ये

सब भूलि परे नितहीन संदर के उरहै॰

गुरुदाऊ ॥ राग मधु धुरपद ताल चार। जो
गी कहैं गुरु जैनि कहैं गुरु बोध कहैं गुरु
नैगम मानैं स्याई भक्त कहैं गुरु संन्यासी
कहै बनवासी कहैं गुरु और बाबानै न्यात
रा॰ सेष कहैं गुरु सो फिकहैं गुरु याहितै
हेदर होत हरानै। बाऊ बाहै गुरु बाऊक

रा॰म॰ 27

हैं गुरु है गुरु सोई सबै भ्रम भानै ॥ राग मधु

मुवाद ताल चार ॥ सो गुरु देव लिपै न

छिपै कछु सत्व रजो तम तापनि वारी ॥

इंद्रिय देह मृषा करि जानत सीतलता स

मता उरधारी ॥ व्यापक ब्रह्म विचार अखं

डित द्वैत उपाधि सबै तिन टारि ॥ शब्द

सुनाइ संदेह मिटावत सुंदर बा गुरु की ब

लिहारी ।। राग मधु ध्रुवपद ताल चार ।

है गुरु कौ उर ध्यान हमारें । परम ब्रह्म ल-

बताई दियो निज एक अखंडित व्यापक

सारें । राग द्वेष करै अब कौन सौं जो

ई है मूल सौ है सब ठौरें । संशय शोक ।

रा० म०

मिटवै मनकौ सबतत्व विचार कह्यौ नि
रधारै। सैदरपुरु किये मलधोइ नहै गु
रुकौ उरध्यान हमारे॥ राग मधु धुवपद
ताल चार। ज्यौं कपडा दरजी गहि ब्यौं-
तत काषही कौं बढई कसिश्राने॥ कंच
नकौं ज्यु सुनार कसै पुनि लोहकौ घाट

28

लहा रहिजानै। पाहनकौं कमि लेत सिला

वट चार ऊनहारकै हाथनि पानै। तैसैंही

शिष्यकैसै गुरुदेव जु भेदरदास नवै मन

मानै ॥ राग मधु ताल तिताल ॥ ऐसे गुरु

देवकौ हमारे जु प्रणाम है शास्त्रहीन मित्र

कोउ जाके सब है। समान देहकौ समस्त

गा॰म॰ छांडे आत्माही रामहै। औरङ्क उपायिजाकें

कबहून देखि यत सबके समदमे रहत

आठों जामहै। रिद्धि और सिद्धि जाकें हाथ

जोरि आगें खडी सेदर कहत ताके सबही

गुलामहै। असि प्रभुमा हमकेसे करिकहि

सकें ऐसे गुरुदेवकों हमारे जु प्रणामहै।

अथ राग गंधार प्रबोध चंद्रनाटक परिछेद माइ

ताल। ।सवैया।। चंदनको छिरकाव करोम

गि फाटक हेम सवेद बनावो ।। जल जंत्र सभे

गटह घोल दिजे तिन भीतर अंग सुगंध मिलावो।

सभ हारन बंध निवारक सो गज मोतन हार ल

डी लटकावो। शक्र सरासन चित्र ध्वजा सभ सो

रा॰गं॰
ना॰

यनके सिर माहि झुलावै २४॥ कवित्त॥ फेर देम
कह्यो महाराज है समीप आप चालीए अगारी स
नमान अति कीजिये। कह्यो है हंकार तुम भले
ही उचार कीयो हू जिये तैयार ह्वै उपाइन को दीजि
ये। जाइके उपायन ल्याइन के माहि धरी जोर क
र कह्यो सब नास पिषी जिये। आपे महा मोह मू

गंर

प अरमै अवी सकी यो वैभव विभूति परवारसो स

हीजिये । मेरा मोह भंपम अनूप पिंघहसे अति

कवित

अहे जड ठगि सभ लोक वोरानेहै । लोक परलो

क माहि भोगन सघ देहने विभिन्न मूफ अनमा

वषानेहै । अकाश तेर फूलट विसाल फल आस

कोर कहे नभ फल हैको साद किन जानेहै । भप

ग॰ गे
ना॰

घोटे पैउन घेड सबलापि। जगवोलसु कपोल लो
क सुगले टगानेहै। जोई जगनाहि नाहि वस
तकैं सुग्राहि कहै भयेहै। वचाल वाक मटघा वेद
मानीई। चारवा कनके वाक सनना हिको ग्रस
तकहे भये मृफलोक नाहि विंदाकों वषानई।
ग्रहो ननसारको विचार नम ग्रापकरो काटे नन

ग॰
२

२ध १नि २सै २म २ग २रे २सै । २म २ध २नि ३सै ३ग ३रे
सीस रंग बाली उर ठानि है। नैन नै निआरे जो पर्यारे

३सै २नि २ध २प २म २ग २रे २म २ग २रे २सै
जीव पिवे कोई नवी नन भिंन पेर आन्म सज्जानि है

कवित॥ लोगन को वंचि भनि वंचियो नि जानम

को शीतजल नाइ हन आनम नपाइहै। नाक मुष

पद पान देहैं है समान सम मन मैं न आर कर्म व

णी को बनाइहै। आपनी पराई नारि संपदा बनाई

क्षति नाहि हम जाने सठ भेद को अलाई है। नारि
धन भोग जंनि पाप को विभाग यह आपनो पग
यो बल हीन सुष गायहै॥ कवित। आतम शरीर
यह थीर चार ताकै कहे आगम प्रमाण एक नाहि
को सुलेषिये। भूमि जल तेज बाइ नभ सो बनाइ द्व
पै जाहि में प्रमाण सुप्रतष एक पेषिये। नारिन

को भोग और द्रव को संजोग जोई यही उतपत्ति रच्य
न और कछु देषिये। चेतन सम्न होई नाहि पर
लोक कोई मोष विन स्त्न और दूसरो न देषिये॥
यही मन चार सष उपने विचार की उत्तम सिखो
न चार वाक को पढायो है॥ चार वाक सिषन ष
सिषन पढाइ यह यही सब सिषोन लोक भीतर

रा॰ मे॰
ना॰

4

बलायो है। ऐसे सुन चारवाक सिष लीये पेषन

समाज राज सभा माहि आयो है। सिषको बुला

इ सभ जाइ बात पेऊ कही देउ नीति बिदियान

और कछु गायो है॥ दोहा॥ वेदत्रयी गुर पेसकु

न बिद्या कहै उदार। वेदन सो करयो जगपावे स्व

रग अपार॥ रा॰ ना॰ गं॰ धार प्रबोध चंद्र नाटक ना ल

सवैया ॥ रतनको परलाप सुनो यह वेदत्रयी ज
गमाहि वषानी । यावत यता सुद्व विना सभ पे
सुर लोक जिजावत पानी । तौं द्व दारु दहे उमजे
फल भूरहे वहीन समानी । हैन कछु सकपोल
कही यन वचनके हित पेक कहानी ॥ दोहरा ॥
सगिलहै पशु गातने जव जग कारक चेत ॥ तौ नि

गा॰ गं॰
ना॰

5

जजनक जर गलकैं घातकरै निस हेत । सवैया ॥
हुत आह रहास्त जीवन कौ ध्रुनि जो परलोक
विषै छिपताई जल गंगादपे । नवसी जगमै ऊर जा
ग लषै तनकौ विग साये स्तन दीप सिषावड्ते
ल दपे । विनु पावक सौ गरहमै निकसाप हुतविड
ननकै जगलोग हगे मघ पढ्रकारै विपवेदवनापे·

5

गुरषान सुषानंद आगोपिया सुषजौ गुरषारव्य

आप अलापे। इहनो अनि नीरष्यिकार जिने किह

कारण भोगनने उरपाये। जग सुष तजे वन जाइ

वसे नप दीरघ सो निज देह न पाये। जग भोग न

यागि सजोग भजो सुषहेत रहे विष आगम गाये

सोरठा॥ पूरन कीन अलाप आगम नाम सुनो परे

रा॰ ते॰
ना॰

6

आमामोदकथाप म्हाष जिपनि म्हो वई। सवैया।
दृग दीरघ अंजन श्याम खिरे जनु नील सरोरुह है
बिराजे। नवनागरी आनन नागकला अलि
कै अलिसी म्हकपोल म्हराजे। कहि नाहि अलि
गनसे जनमै कहि पावक पंचम देहन पावे। क
हि भिंजन भीष अहारकहा उपवासन कैसर देह

6

सुकाये। हेतुर ग्रंथकार हैं जेते जैसे बषान बषा

न तेते। उन्ह बिस ग्रन सुघ संसारा नाते नानो क

रे प्रसारा॥ दोहा। सुनित सिषकी बान को हसे

सुबालक जान। चारबाक भनि युक्ति सो आगे क

रे बषान॥ सवैया। उत्त्व संग मिले जग के सुखु

जे बड हरत जो इह भान बषाने। तेन ग्रंथ महा

रा·गं·
ना·

7

पसहै हमजीवनेक परतारक जाने। तिन तेदल
जेतम संगमिले तिह ना हितजे जनजे सवज्ञाने
इह भाति लकायन वाक सुने महामोह वली म
नैमै विग साने ३७ ॥ इति राग गंधार प्रवोध
चंद्र नाटक परिछेदः समाप्तः ॥

7

अथ विभास रागस्य सवैया तितारा । ३ । मोहिवो मोह
नकी गतिको गतिहू पढ़ो वैन कहा यौं पढ़ैगो उ
प उरो जनकी उपजे दिन काहि मटै ओगियान म
टैगो । नैनन कीगति गूढ़ चला वलके शवदास
प्रकास वढ़ैगो । माई कहो यह मायगी दीपति
जो दिनदै इहि भाति वढ़ैगी । नव वधूको रस

वि॰रा॰
म॰

मंजरीमैं भ्रेकान सो वना कहाईहै ॥ विभास राग

स्य सवैया ताल ॥ २ ॥ यत्न स्रूयरि लोचन लोल

सो मेलि स्वकोड कटाक्षकी कोर कपी ॥ स्र

त्व माधुरि वानी वसी वनराईयो केश मोहन त्य

स्व पकी ॥ उच नम्र नवै नन लाजवि

राजनि वारगहे चढ्ठे और मकी ॥ ॥

नवढी उनि वालहिं वालकना हृति ग्रेग प्रनेग

की फौज वढी विश्राम रागास्य सवैया नाल ३।

उरु उरो जनके परसे विस भौहि वढी नवढी कि

न छोहै। टेरद वक्रद ग्रेव नहीं रसवीति गही उ

नही मन मोहै। नीवी कीनी विक्रुवै छविशो

रसी पेलन पानि पियापद्र सोहै ॥ नाहि करो

वि॰रा
म॰

जिन नागरिनु राज राज दियो नव प्रेकस को है ॥ विभास रागस सवैया ताल ॥३॥ पाइ परैं मन हार करैं पलका पर पाय दियो भय भीने ॥ सोई राई कहि केशव कैसेहू कौंर हीं कोरक मोहन कीने ॥ साहसकै सखवैसी सखवैकै छिनमे हरि मानि सबै सखलीने

२

एक उमा सषीके उसके सिगरेई संतोष विदाक
रि दीने विभास रागस सवैया ताल ३। बोलैन बा
ल बुलावनहूं न षरेष लिषै भव प्रेम परेषो। आ
पन हाथ विलोकि विलोकि कहो नवके सब उ
हि वसेषो। छोटी बडी विधिरेष लिषी जग आ
पकी रेषस कौन जु लेषो। प्रेमने बोल ससोन

वि·रा·
मं·

पन्यो शकुन्तलाय कह्यो पिय कैसीहै देषी ॥ वि

भास रागस्य सवैया नाल ३ ॥ आजुमै देषीहै

गोप सुता इक हो यन औसी शरीरकी जाई ॥

देषतही रहिये उनि देहकी देषते औरन देषी

सुहाई । एकही वंक विलोकनि ऊपर वारौं विलो

कि त्रिलोक निकाई । केसवदास कलानिध व

3

३१

क हूकिय कामकि मेरी कन्हाई ॥ विभासरागस

सवैया नाल ।१। ज्यौं ज्यौं झलास सो केशवदास

विलास निवास हियै अवरेषौ । त्यौं त्यौं वढ़ौ उ

र केप कछू भ्रम भीत भयौ कियौं सीत विसेषौ ।

मद्दिन होत सषी वरही मेरे नैन सरोजनि सोच

कै लेषौ । नैन कह्यौ सब मोहनको अरु विंद

वि॰रा॰
स॰

4

सौहै सोतो चंदसो देष्यौ। विभास रागस्य सवैया

ताल। ३। कान्हभले जूभली समझाई हौं मोहि

समुझकौजो उमह्योहै। केशव आपनो मानि

कसो मनहाथ परायदै कौने लह्योहै। नैनन

ही मिलबौ करिये अब वैननकौ मिलिबो नो

रह्योहै। जाइ कह्यो नमजैसो सषी सऊ॰ ...।

है गपाल मैं ऐसो कह्यो है । विश्रामसागरमें वै
या नाल ।३। हैगनि मंद मनो हर केसव ध्याने
द कंदहिये उलहेहैं । औरु विलानि कोमल स्या
मनि अंग सुवासनि गाढे गहेहैं । वेक विलोक
निको अविलोकि सुभारुकै नैदकुमारु रहेहैं ।
पईनो कामके वानकसावन फूलनके विधि भूलि

वि·रा·
म·

5

कहैहैं। विभास रागस्य सवैया ताल ।३। तोहि

तपाय वजावत नाचत वार अनेक सिंगार बना

यो जी हमै आनकौ आनिकै छोऊ मैं तेरो तऊ

न भयो मनभायो ॥ भावै सुनू करिवोक

रि भामिनि भाग वडे वसतैं करि पायो।

कान्हतेैं सुयेज चाहति नाही ०

सुवाहनि नाही सुवाहनि है अव पाइ लगायो ॥

विभास रागस सवैया ताल । ३ । आज विराजत है

कहि केशव श्री वृषभान कुमारि कन्हाई । वानि

विरंचि वहि क्रम काम रची सुविचारि सुतौहि व

नाई ॥ अंग विलोकि त्रिलोकि मै ऐसी को ना

रि नहि जहि नारि निवाई । सूरति वैन सिंगार

वि॰ग॰
स॰

समीप सिंघार किये कियौ सेदर नाई ॥ विभास सवैया ताल तिताला ॥ ३ ॥ आवत देषिलिये उठि आगेकै केश आपुहि आसन दीनो ॥ आपुहि पाई पषारि भले जल पानकौ भाज न लाइन दीनो ॥ बीरा बनाइकै आगे धरे जब वै हरिकौ कर बीजन ली

८५

नै। वाहेगाढ़ी हरि ऐसो कह्यो हसि मैनो इनो अप
राधन कीनौ ॥ विभासरागस्य सवैया ताल।३॥
चितवौ चित गोपं हमापं ह सौ होउलापंनें बोलो व
है निन मौनै। मौंह अनेकनि आवहु अंककरै
रतिकौ अति रैन कीगौनै ॥ घवापनैं घाइ वस्या
इ विरी जब आईहौ केशव आजही गौनै ॥ मोर

वि·रा·
स·

न के मनको मोहनी सकहौ यह सिष ईसि
ष कौनै ॥ विभास रागसु सवैया ताल ।२।
हिनकै इन देषउजू देषौ सवै हिन वानस
नौ जसुनी सवहीहै ॥ यहनौ कछु औकवहै
सवही अव मौंह कवी वकरी जनहीहैं ।सत्र
जाइ कही समुझी सवकेमाव हूटी सवै हम

मौज कही है । मान कियो अप मान करौ तो हमैं सो भ्र
व के हसिके कोर ही है ॥ विश्राम गताम्रा सवैया
नाल ।२। हो लाल पाइ रही सिष सीषै नए सिष
ने हूं सिषाई । मै वऊ ते उरव पाइ रही देषोपै केश
व केहूं कटेव न जाई । देउ दिये विन सायत हूं
संग छूटन की धलकी घलताई । देषऊ देमप्र

वि॰रा॰
स॰

8

की भट कोटि मिटै न घटै विषकी विषमाई ॥
विभास रागस सवैया नाल ।३। केशो औरन
सौं रसि रासि रच्यो रस वाउ सबै हमसौंहैं । ह्वै मन
मै लेन जोलो कछु अबक्याउङ्ग बोलिवो बोल हसौं
हैं । देखङ्ग धौउ बारस कोचन आरस लोचन आरसी सौं
हैं । आपज वै सेहो साजसौं आजस भूलि गई

पिय कालिकी सौंहैं ॥ विभास रागस्य सवैया ना

ल ।२। वैठी सषीन कीसी भेससभा सवही केस नैन

न माऊवसे । वूझेतैं वात वषाय कहै सनही मनके

शव दास हसे । विलषिहै इत खेल उतै पिय विन

विलावनि यो विलसे । कोई जानै नहीं टगदोरि

कवै किनकै हरि अंषिनकै निकसे ॥ विभास

वि·रा·
स·

रागस्य सवैया नाल ।३। वैठिहुती हज नारिनमै
वनि श्रीवृष भान कमारि सभागी । षेलतिही स
षि चौसर चारि भई नहि खेलखेरी अनुरागी । पी
छेते केसो वोलि उठे स्रुतिकै विन वानरि आन्तरी
जागी । जानिन काहु कवै हरिके स्वर मारगही
सरसी दृग लागी ॥ इति विभास सवैया संपूर्णम ॥

अथ खिमाग रागस्य गजल नारा ३ ।। टुकहि रस

हवाको छोड मिया मन देस विदेस फिरै मारा

कजाक अजल्का लूटै है दिनरात बजा करन

कारा । क्या भैसा भेडिया बैल सुतर क्यागाने

पला सिर भारा । क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या

आगाअ अवाका अंगारा । सब ठाट पडा रहजावेगा

वि॰गा॰
गा॰

जब लाद चलेगा वनजारा ९ गर है तु लकखी वनजारा
और खेप भी तेरी भारी है। अय गाफिल तुझसे भी
चढ़ता एक और बड़ा व्योपारी है। क्या शक्कर मि
सरी कंद गिरी क्या सांभर मीठा खारी है। क्या दाख
मुनक्का सोंठ मिर्च केसर लौंग सुपारी है। तु बधिया ला
दे बैल भरे जो पूर्व पछ्म जावेगा। या सूद बढ़ा कर लावे

गाया द्वारा वाधा पावेगा । बदमार अजलका दस्ले
मै जव भाला मार गिरावेगा । यनदौलन नानीनो
नाकवा एक भनगा पामन जावेगा ३ हर मंजिल
मै अवसाय नेरे यद्व जिनना डेराडाडा है । जरदा
म दिमका भोडा है वं एक सिपर और खोंडा है ।
जब नाइक ननका निकल गयाजो मलकों हाडा

विरा
गा

है फिर ठंडा है मैं भेड़ा है ने रखवा है ने मांडा है ४ जब
बलने बलने रसोंमें यह गौन तेरी फल जावेगी । प
क बथीया तेरी मढ़ीपर फिर बरने वा मन आवेगी·
यह खेपजो तने लादी है सब हिसोंमें बट जा
वेगी ।। यी एज जवाई बेटा का बन जाया पा
मन आवेगी ।। ५ ।। कौं नाहक बोज उ।

२

डा लाहै इन गौनैं भारी भारी के जब काल खदेरा
आन पड़ा फिर हनैंहै ब्यौपारी के। क्या साज जड़ा
ऊ जर जेवर क्या गोटे थान किनारी के। क्या घो
ड़े जीन सुनहरौं के क्या हाथी लाला अमारी के।
६ जो खेप भरे न जाना है यह खेप मिया मत जा
न अपनी। अब कोई घड़ी पल सायत मे यह खेप

वि॰गा
गा

3

वदनकीहै। खेपनी क्याथाल कटोरा बोरीका क्या
पीतल काफकना फकनी। क्यावर्तन मैंने रुपेके
क्यामट्टीकी हडिया चपनी २ मगाहूंनहोनलबा
तैंपर मन भूल भरोसे प्यालौंके। सबपना तोडके भा
गौंगे महदेव जलके भालौंके। क्याइवीहीरे मोतीके
क्याफेर खेजाने मालौंके। क्याठक्केनाशामशहूर क्या

नखेने शालइशालोंके ८ जक्ककामन आवेगाने
रे यहलाल जमर्रद सीमोजर । सब एजीवादमें वि
रंगी जब थान बनेगी जोऊर । कामम नेद नकि
प मुल्क मकान क्या वैकी जरसी नखेन छनर
क्या माल खजाना मुल्क मकान दौलन इशमत
फौज लशकर ४ यह हम यउका सायलिये कौ।

वि॰ रा॰
ग॰

फिरता है जंगल जंगल । एक भी भगत पास न आवेगा
मौकूफ हुआ जब अन्न और जल । धर बार अटारी
चौपारे क्या खासा नन सूफ क्या मल मल ॥
क्या चिल बनन कोये रेशम के क्या लाल
पलंग क्या रंग महल ।१०। क्या अबन्त म
कान बन ना है है देवे भ मेरे नन का पोला । ते ऊंची

4

गाफी उठाताहै यहां गोरगाफेले मनुह बोला। क्या
येनी खिदकारेट वहांका कोट जेगारा ग्रम मोला।
क्या तुजैसे हला नोप किला काशी शादाह रोर गो
ला॥ अब काल फिराकर बाबकको यह वैलव
दनकाड़ा केगा। कोई नाज समैमैटेगा नेराकोईगो
नसिये और टेकेटा। होफेर अकेला जंगलमें हू

वि॰ग॰

5

वाक कल हदको फाकेगा। उस जंगलमें जब आ
ह नजीर एक मनगा आनन जोकेगा १२ यह
पेंड अजाईवहै उनियोंकी और क्याक्या जिनस
हकतीहै। यहां माल कीसी का मीटाहै औरबीज
किसिकी खहीहै। जंकुपकनाहै जंक्कु वननाहै प
कवान मिठाई पहीहै। जब देषा खूबतो आवि

रको नेलहरा भाउन महीं है । गुलशोर वबुला था
गरुवा औरको चड पानी महीं है । इस देखणेके
ईस दुनियांको सब थोखेकोय सीहीं है । कोई ना
जखेदीदे ईस कर कोई नखे नणा डावन षाना है
कोई कपडे रंगे पहरता है कोई गुदडी ओढे जाती
है । कोई भाई वापचाचा मामा कोई माती हन क

वि॰ गा॰
गा॰

6

ह्लाना है जब देखा ख़ूब तो आखिर को मैं मिला है ने
जाना है १२ गुलशोर । कोई सेठ महाजन लाख पती
जैव जाज कोई पम मारी है । यहा वाजा किसी का
हलका है और खेप किसी की भारी है । कारवाने को
न खरीदे है और किसने जिनस उनारी है । अब देखा
ख़ूब तो आखिर को दलाल न कोई ब्योपारी है १७

कोई फलके बैठे मसनेद पर कोई रोवे अपनी दो

लत को। कोई बोले अपना नजर से लो और मेरा है

मा मुझको दो। कोई लड़ता है कोई मरता है झगड़े

हक और नाहक को। जब देख देवना आखिर

को कबूल लेना एक न देना दो ५५ रक्म नजर मी

आ मिल है और फाजिल मला (?) खाना हो। कोई

वि॰रा॰
रा॰

आ मिल का मिलदाना कोई मस्त सिहा दीवाना है -
नाचीज फनीला फालफसे और जाड़ में नरलाना है -
जब देखा ह्वनो आखिर को सबहीला मकर वहा
ना है । कोई लोटे हवे गलियों मे मे यार किसी का घ
रा है । निनक जीये झगड़े रले है यह मेरा है यह तेरा
है । जब देखा ह्वनो आखिर कोन मेरा है ॥ ८ ॥

कोई टोपी टोप बनाता है कोई बांधा फिरता अम्मामा
है । कोई साफ बरहना फिरता है ने पगडी न पाजा
मा है । कम खो खे गजी और गाढे का तिनकजीया
है । जब देखा देखा तो आखिर को ने पगडी है ने जामा
है १८ कोई बाल बढ़ाए फिरता है कोई सिर को घो
ट रखता है । जब देखा देखा तो आखिर को सब ।

कोइ अकेला जाता है ९ कोई रोता है कोई हसता है
कोई नाचे है कोई गाता है । कोई छीन झपट ले भागे
कोई घोस डर दिखलाता है । कोई माल इकटा करता है
कोई ऊंची झलफ लगाता है । जब देखा हुवनो आ
गिर सब झगडा रला जाता है । कोई बेबे भंग शराब अ
फयम करी हथ दही की फेरी है । कोई पला सिर पर

लाता है कोई लाटेवे लम्बके री है। कोई जगडे अप
नी जागह पर यह मेरी है यह तेरी है। जब देखा हु
वतो आखिर कोन तेरी है न मेरी है न तेरी है ॥ कोई
वली टेकी हनी है कही खोसी कडवकी छली है। क
ही वलनी काज पिटारी है कहीं छलहा वकी छ
ली है। तरकारी वैंगन सागहरा गड गाडा गाजर

बि॰रा॰
गा॰

म्हलीहै । जब देखा छिबनो आगिबरको सब बिकरी दे

षन म्हलीहै २२ कहीं बान घटेरन टाट पगाडी कहीं दम

राब बमरबन कलाहै । कहीरोक रुपयेका खुरदा

कहीं कौडी पैसा घेलाहै । कहीं छटना छाज पिटा

रीहै कहीं बिकना खोट खेटोलाहै । जब देखा छि

बनो आगिबर कोने पीटी खोट बराबोहै ॥ २३ ॥

कोई शिकरा बाज उडातीहै कोई हाथमें रषके च
चलीहै। शाहबाज कोईले बैठीहै और दौड किसीने
डलतीहै। हैजार किसीके हाथोंमें और नाचतीफि
रत घतलीहै। जब देषा हिरनी शिकारको नेरशा
म मतन महनलीहै २४ अब किसका रंगढंगका कहि
ये और किसका रूप भला कहिये। एक दमकी पैठ

वि·गा·
ग·

लगी है यह अस्बोहम जा वरवा कहिये। येसे वतमा
शा देनावे जोर अवजा कहिये देजा कहिये। कबु
वात नहीं वन आनेकी चुप चाप भला है क्या कहिये
गलशोर। आगहवा औरकी वडपानी मही है। ह
म देखके इस डुनियाकी सवयोवेकी सही है।
वटमार अजलका आपडेवाइक इसको देखेडरो वावा

१०

अब शकवहाओ आवोंसे ओर आई सरदभरो बाबा·
दिल ह्राथ उठाकर जीने सेवे व समन मारमरो बाबा·
जब बापकी खोतिर रोतेथे अब अपनी खोतिर रो
बाबा। तन ह्राखो ऊबडी पीठ ऊई घोडे पर जीन थ
रो बाबा १९ जब जीनेको हमरुख सनदो ओर मर
नेको मरमान करो। रैवान करो इह सान करो या

वि॰ रा॰
म॰

अन्न करो या दान करो। या अपनी लड़ वटवा ओया खा
सा हलवा नान करो। अक्क लनफ नहीं अव जीनेमें
अव चलनेका सामान करो २७॥ ननसूपा ॥ टि
ल काटो अपना जीनेसे अब और गलेको मन
काटो। अब चाट फ़नाकी दवे ववावो और दू
न किसीका मन चाटो॥ अन छोडो हिसे व

त्वरेकी अौर भाजी अपनी नमवोटे । नाकेदवछेर

कूद हुके अब अौर उलनी मन कोटे २८ यह अमवङ

न कूदा उछला अब कोडा मारो जेर करो । अबमा

ल इकट्ठा करनेथे अब ननका अपने फेरकरो ॥

गाफ टूटा लशकर भाग हुका अब न्नानमे नम शाम

शेर करो । नम सांझलडाई हार हुके अब भागनेमे

विराग

12

मन देर करो ।२९। सिर कांपा थोरी बाल हुए पसह्न
पीला पलकें थान ज़ुकी । कद देपा कान ह्नपवह्नें
ओर ओखें भीतर चलायगाई । सबवे नीद गई ओर भूख
घटी दिल सफलहुवा आवाज नहीं । जोहों नी थीसो
हो गुजरी अब चलने मे ऊछ देर नहीं ।३०। इसपा
व खिसटकर चलने से मन रखने को हैरान करो

१२

और पीपले मडुसे रोटीको मन मल मलकर हल
कानकरो। अब आपड़ुपनुमपानीसे मन पानीका
नुकसानकरो। ऊकु लाभनहीं इसजीनेमें अवम
रनेमें पहचानकरो ३१ ऊपनाल ज्ञान मथ मानेसो
नरकैं ये जिनको रहनहै निस दिन खुमारी। ज्ञान
मथ पीवन भैहै खुमारी सरन अंतर वेले लगी र

वि॰सा॰
गा॰

13

हनारी । अनंदवन मेरो सदा निसवा स्वर नरक स्वर्ग
भाग गये इकवारी । कहत कबीर सुनो भाई साधो
गुरु कीनो मीन मोहे हरहेमें प्यारी ३२ ॥ कवित
ताल ॥ २ ॥ मूलफाक ॥ पहरे आई नवसनअ
वरन अनेंरी सुंदर लया वड़त सियानी । गोरेव
दन पर अलकां छूटी मानो वंदन लेप टानी ।

मृगसे नैना कोकिल बैना कटके हरगज चाल सुहा

नी । शाहे बहादुर येक्ब निरखत इंद्र लोक की अप

सर बिसरानी ३३ ख्याल । छडगल बांह प्यारे भोर

भै छेडना । दीप वाकी जोत घटी बेट डंका बोलना

मोतनके हार सीनल छुटि आयो छेजना ३४ ख्याल

साडे नाल बोलीवे आमीवे रंफेटे आखोपैगासि

कि.रा.
रा.

14

आलोंदी ओंगालिआ। इय हूँडि मोडे कारी कम
रीया वाप असाडे देया पालिआ ३५ दाल नाल २
मीयां राजावे मोणा निन साडे आओदामाउही रा
ल मनदा नहि आपना आपजनामदा कोई सम
आउे कों पैंहप मावेहदिवेलाम ॥ इतिश्रीवि
भासरागस्य राजल समाप्तम् ॥

अथ विभासरागस्य टपा ताल ।३। नोंडे वेवखदि
नोंगामेव । वफ्फेवेषां वारिवे राजनन् हरोंवेसो ।
एणार वस्तनले साडीवोग ॥ विभासरागस्य टपा
ताल ।३। आयानिस भालवो रांजन यार किञ्ज
योते न्यार । हीरनि सानिव कि झब्बदापीह
दिल दिड्ई आंसार ॥ विभासरागस्य टपा ता- ३

वि·गा
ट·

मयाने वेलियावे हरनया वसदे लोक विगाने मि
त्र करदि वारिवे घैयां नापउदी वे मियां रव करे
न्ने सिमडे आवो नैयनादे ॥ विभास रागस्य ट
पा ताल ॥ ३ ॥ केहा जाउदा कीता वेदिल
न्ने कदवना जाने दर कदर मियाम् ॥ वेप
नन् मस्ताक जिमेराइस्क लगा मन लीना १

दिलन्॥ विभास रागस्य टपा नाल। ३। चलउ

ठ कर दीदन यारा मियें। दीदन यारेदा आमदा

जोदामियें। नाग वहारें निवे वेषन चलि प

हो मियें मैंडा दिल परदा वजार मियें॥ विभा

स रागस्य टपा नाल। ३। देखणा दिदार जारें

दा पर खेले पर खोयले ढ मियें। खोटा खोरा

वि॰रा॰
८॰

पय चोन घोडि मियां सोई गनिमत ईमान प्यारे
दा ॥ विभास रागस्य टपा ताल ॥ ३ ॥ किजाल
माडिवे मियां यो किसदी यारीदाले विसडडे नाल
न जाने नामन जानेकी करवे । सावे वेखो ने
डा सांवरो योमे डियाने जिंददी दिवानी मैं
डा जिडरे ॥ विभास रागस्य टपा ताल ॥ २ ॥

जाइ जाके मालकीनाये । इस्कलगा मैंडा जीनर सोदा

के हाहाल जिगर परवीनावे ॥ विभास रागस्य टपा

ताल ॥ ३ ॥ कौन गत भई मोरी आनना मिलैं पिया

मोकों ॥ उन बिन कलन परतप लछिन के मैंवे

॥ बिहाय आन मिलै पिया मोकों ॥ विभास

रागस्य टपा ताल तितारा ॥ ३ ॥ मार चला

वि॰ रा
ट॰

3

कौं छोडि चलावे मजनू इस्कयारीवो कौं मियां
ईया खेदा यद स्तन मेरी दाहे फिरयाद हो मे
री मियां ॥ विभास रागस्य टपा ताल ॥ ३ ॥
खिडनदा परवे लावे भला मियां वेसानू चा
क चाक जवावां भोदा कोईवे । ओदा मियो
दा साडे वरवे भोरी लगि मरहवन पाक ।

२

विभास रागस्य टपा ताल ॥ २ ॥ ह्रोवे फोला मन

पर वारदियाम् ॥ ओष लडेदिय माकसेदि विन

वफयो दियो ह्रोवे फोलामें ॥ विभास रागस्य

टपा ताल ॥ ३ ॥ जिंद मोडियावांदेनाल लगि

वे ॥ आदारंगने जदमें पावोगरे लगावो वि

न डिठेयो मैठगी ॥ विभास रागस्य टपा ताल ३

वि·रा·
८

सचि आखी मेरे प्यारेनूं राम किथेवे गारिश्रो ॥
आप छड जादे वारी नाल मेंडी देमफेड थकें
दी मैं हारिओ ॥ विभास रागस्य टपा नाल ॥३॥
कीतावे कदेजा हारदा पारदा गम खाखा ॥
की पुछदे वारीआ जय दिलवे करारदा हौंतो
यां दे नाल गुजारदा ॥ विभास रागस्य टपा

४

नाल ।३। मोरि नगरि श्रामे नारहोंगि नेनो श्रनत

करम भोग। सदारंग रसरंग कराई हमकों दीनी

बडन विरोग ।। विभास रागस्य टपा नाल ।३।

श्राज मोवन गाजें श्राये पियार बाजर मेरे ।। श्रेरा

रंग रंग लागे श्रचट उगावन गान छिनल रवे

पल झपकन श्रापडेरे ।। विभास रागस्य टपा

वि॰रा॰
८॰

नाल ॥३॥ पलक टरे आज मेरा साई ॥ जोबा
है जग राज कर वोई कर सभ ऊदर्न उसि
नाई ॥ विभास रागस टपा नाल ।३ ॥ भई
लीड़े बोमरी विन देखे नेकना सहाय । ज
बने गमन कीनो विदेश वा भवन भावे कछु
न हिंवा ॥ विभास रागस टपा तिनारा ।३।

5

५२

मगा मध मैरे मगोरे धानि सामरे सानी । पगामे धैरे
धैरे पगाधम धामरे सासरे सानी ॥ सारेगा ममेम
गरे मगामैं धाम धाम पेप धानी ॥ साध साध प
गधरे सदारंग मोरी पकन मानी ॥ बिभास रा
गसा टपा ताल ॥ ३ ॥ पगा मधपरि सानि परे
मपगा धरेरे ॥ रीसमाध रोवैगानि साध साध

वि॰रा॰ टं॰

स्तानी यापम गावे ॥ इति श्री विभास रागस्य टप्पा समाप्ता ॥

6

२४

६

पद ताल चार । ध । श्रीपुणामा परम शक्ति
भक्ति युक्त जोड़रहे लहे मोदबोध युक्त।
मुक्ति रूप पावे ॥ इति प्रस्थायी ॥ पुणाम।
याम ब्रल युक्त वामभाव मेत सक्त एक
रूप भेद रहित विहित कला मावे ॥ इति
येतरा ॥ जैसे पथ मेंनतावियुक्त भित्र ना

रा॰ग्रा॰ हि होत तैसें श्रीराधिका जुन्यारि नही वा
रे ॥ बाल निधी याहि रूप ह्लत्येकज धा
न धरै हरै पीर नानाविध जगात ल्कोषा॰
भारे ॥ इत्याभोगः ॥ इति आभीरी रागिनी
शाकिपरि छेदः ॥ ॥ ॥ ॥

अथ आभीरी रागिनी शक्ति परिच्छेद मा
ह ध्रुवपद ताल चार। ध्रु। गाव लोक प
रम धाम जहां आदिशक्ति बसैं जोके गु
ण गायन तें परम भाग्य पावें ॥ इति।
अस्थायी ॥ श्रीराधा जाह्नवि पुन तुलसि
विलस कुसुम पत्र रमा परम भाग्यवती

रा॰ ध्रु॰

साची बिरज गावो ॥ इतिध्रुवना ॥ जोसे ते
ड देव भये ब्रंड कोटि बिबिध भांत भिन्न
भिन्न नाम धाम देव दनुज धावो ॥ बाल
निधी श्याकी को प्राडभाव जगत भयो ।
श्री श्यामा चरण कमल नमो नमो ला
वो ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी आभीरी ध्रुव

वपद ब्रह्म ताल चार।४। मत चित आनंद

केंद वेदन कर हीये ध्यान दिन दिन प्र

ति स्वदिन मोह मथा दिन षोहुं ॥ इति प्र।

स्थायी ॥ जो के हित अहित करे लोगनि

कों लूट लूट धनहि भूमि खोद धरै बि

विध कलष जोहुं ॥ इति अंतरा ॥ वनिता

रा॰ आ॰ मृत बंधु सकल राषत नहि ग्रंतसमे नि॰

ज हि मान वर कुटुंब ग्राम फाम मोहे ॥

मोत हृषय सकल जगत बाल निधी वे

तन को जान नित्य भजन करो सकल

जन्म मोहे ॥ इत्याभोगः ॥ इति आभीरी॰

रागिनी बल परि छेदः ॥ ॥

अथ आभीरी रागिनी बल परिछेद माह

ध्रुवपद ताल चार।धा। विश्वंभर विश्व

करण हरण जगत विविध भांत व्या

पक नित अमित जास मान करत नी

के ॥ इति अस्थायी ॥ एक कहें सर्व ज

गतकरता सोइ अपर कहें कर्म बल

रा॰ग्रा॰

जन्य जगत थर विकल्प जीके॥ इतिश्रेतरा

अपर कहें कर्म सोत सोइ अनंत काल दु

ष और कहें शून्य काल चेतन सगरी के॥

एक कहें संवित सोइ जागि स्वपन अति

सुषुप्ति समय एक रहे सोइ ईश वखानि

यी के॥ इत्याभोगः॥ रागिनी आभीरी यु

अथ आभीरी रागिनी गणेश परिछेदः

माह ध्रुवपद ताल चार। ध। गर्बहरण

गौरी सुत विघ्न मघ्न हर चरण हरण

विपति सदा यदा प्रीति लावैं॥ इतिअ

स्थायी॥ जाको भाव वक्र एक रदन।

अदन मोदक ग्रत वृह्द उदर विकट तू

रा॰ आ॰

२ग २रे २सां २ग २प २म
प भेट लिये धावें ॥ इति श्रेतरा ॥ रूप गावि

२ध २नि २ध २प २म २ग २म २प २नि २ध
वेद विहम कथन कीये सभी देव देव॰

२प २म २ग २सां २ग २म २ग २रे २सां २म
न मे याहि सुभग रूप कहो जावें ॥ श्रुति

२ध २नि २सां २रे २ग २रे २सां
हि कृपित बालनिधी धापदीयो देषें

२नि २ध २प २म २ग २म २प २म २ग
नहि जगत सकल दुःख रूप रोग खयी

२रे २सां
पावैं ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी आभीरी सु

वपद ताल चार। ४। वेद नमित पाद प

म मम ऋषिन नीक अति गाए नायिक

ध्यावे जोउ सोऊ सुभग पावैं ॥ इति प्र

स्थायी ॥ जब हिं रोग जीत लियो वेद।

ब्यी ब्बीन पीयो अति हिं डावित होइ

देवन ठिग जावै ॥ इति अंतरा ॥ देवन।

2

रा॰ आ॰ महविनय पूर्व गणपतिके वरणन मैबो
ले तब दयावेत मैतन हित गावै ॥ बेद॰
तिथी वरत चारि वेदरहे दिवस मारिय
हो बेद हसो दंड बाल पगहि ध्यावै॥
इत्याभोगः ·:· इति आभीरी रागिनी रा
गेश परि छेदः ॥ ·:· ॥ ·:· ॥

अथ आभीरी रागिनी विस्नुपरि छेदमा

ह ध्रुवपद ताल चार ।४। भोरी तल्प

शायन मथन हरण मित्र परमधाम

नाम जास पूत करण हरण पाप मा

रै ॥ इति अस्थायी ॥ नाभि कंज जात

विविध भांत जीव जगत रच्यो बहुर ।

रा॰ग्रा॰

मन वितर्क कर्क रही देषया रे ॥ इति श्रे
तरा ॥ नितनोया जगत रच्यो रहे नित॰
न वछो नाहि विति ततन दोइ रूप हो
इ गये भारे ॥ शांत रूपा वाम भाग दछ
भाग मन स्वयंभ मैथुन वालानियी स्व
ना हाढि वारे ॥ इति श्राभोगः ॥ रागिनी॰

आभीरी ध्रुवपद विस्तु ताल तीन। ३।

२ग २म २पै २म २ग २रे २सै
रमा रमन को जपले भाई॥ इति अस्था

२नि २ध २नि २सै २ग २म २ग
यी॥ अंत काल जब आइ परे गो तब।

२ग २रे २सै २म २पै २ध २नि
बोह होत सहाई॥ नाम लेत पापी बहु

२सै २ग २रे २सै २नि २ध २पै
तारि अजा मिल सुत गाई॥ ध्रुव को

२म २ग २म २पै २ध २पै २म २ग २रे
नहि चाकर ताको कारज कीये सहा

रा॰ श्रा॰

इ ॥ जल तैं डूबि राषिलीनो गज गहइ।
छोड जग राइ ॥ पोडो सत बडु ताप
निवारे विपन जरन यड राइ ॥ दुर्वा
सा को क्रोध निवार्‍यो अंबरीष लज।
पाइ ॥ दसे दिशा को आमन भिलोज
ब राष सको ना कोइ ॥ बाल नियीक

१नि | २सा २ग २म २प २म २ग | २रे २सा

कण निध जान्यौ थाइ वरण चित लाइ

इत्याभोगः ॥ ∴ ॥ इति आभीरी रागिनी

विल परि छेदः ॥ ∴ ॥ ∴ ॥

ག་ཀ་

3

अथ आभीरी रागिनी शिव परिछेद मा

ह ध्रुवपद ताल चार ।४। श्री महेश ध्या

वो नित रजित गिर प्रकास जास सीस।

वेद अपर गंग अंग रतन चमके ।।इति

अस्थायी ।। हाथ परशु डुष्ट दमन भ्रम

रन नित रक्ष करण धरण हरिण वर

रा॰ श्री॰

ण अभय भाल नयन दमकैं ॥ इति अंतरा

अंबु जात आसन पर बैठबैहें मुदित वद

न व्याघ्र कृति वस्त्र धरें भीति हरण जन

कैं ॥ पंच वक्र विष वैद्य बालनिधी ध्या

न धरें सकल पाप ताप हरो त्रिविध मो

त मनकैं ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी आभीरी

ध्रुवपद शिवजी ताल चार ॥ ४ ॥ श्रेयकारि
जगत तारि हारि पाप ताप सकल डंक
ल चंद शिखर धारि जटा गंगा सरिणी ॥
इति अस्थायी ॥ कर त्रिशूल डमरु लिये
भस्म तिलक भाल रुंड माल नील कंठ
गरल गौरै धरणी ॥ इति अंतरा ॥ पिल्ट ॥

रा.आ. वन में वास करैं भूत प्रेत सभा धरैं प्रगटत मंत्र विविध प्रथम त्रिपुर मथन करणी॥ विहंगी वृषभ गामि नमन करैं देव सक ल बालनिधी चरण शरण प्रवन गनन हरणी॥ इत्याभोगः॥ ॥ इति आभीरी रागिनी शिव परि छेदः॥ ॥ ॥

अथ आभीरी रागिनी सूर्य परिछेद माह।

२ग २म २प २ध

ध्रुवपद। ताल चार। धा। दिनकर रवि भा

२प २म २ग २म १नि १ध १प १नि २सं

नु प्रबल अरुण वरण पीत वसन रतन

२ग २म २प २ध २प २म १ग २रे २सं

जडत मुकुट प्रकट होइ पाप हारे ॥

२म २प २ध २नि २सं २रे २ग २म

स्तुति अस्थायी ॥ उदय अस्त मध्य दिवस।

२नि २सं २नि २ध २प २म २ग २म १नि २सं २ग २म

अर्घ देत लेत दरस सैध्यातेउ वर उपास

रा॰ग्रा॰ ग्राम एर यारे ॥ इति श्रेतरा ॥ वेद याम मा

न विप्र बल पैटे कपट छाडि प्रयात याम

होयें ऋचा फलहिं विविध चारे ॥ चरण॰

शरण बाल निधी ग्रात्म सकल जगत ते

हिं देहु बुद्धि सदा तेज पुंज भारे ॥ इत्या॰

भोग: ॥ ॰ ॥ रागिनी ग्राभीरी ध्रुवपद ता

ल वार । धा । प्रेम मान भानु तेज पुंज गुंज
भ्रमर केन धरैं मेरु वरण शरण भरण
करण हारे ॥ इति अस्थायी ॥ तेरो जउ
ध्यान धरै हरै विपति सकल भेत खेत
हरैं डौरस नित अमित तेज धारै ॥ इति
अंतरा ॥ एवहि बार एक भक्त वरत क

रा॰ आ॰ रण हेत लेत रक्त गंध कुसम निचय सर्व
विधि विचारै ॥ परम प्रीति वान ध्यान।
धरे हरे विपति विकल संपत पति बाल
निधी अरिन गण विडारै ॥ इत्याभोगः।

इति आभीरी रागिनी सर्व परि छेदः॥

॥ ःः ॥ः

अथ आभीरी रागिनी दशावतार परिछे
द माह ध्रुवपद ताल चार। ५। परंब्रह्म।
परमेश्वर व्यापक नित सकल जगत भ
क्त विपति नाशन हित बद्ध वि[illegible]य त
नु धारे ॥ इति अस्थायी ॥ मत्स्य वेद रक्ष
करी कमठ सुधा भ्रमर धरी सूकर भव

गं॰ आ॰ वदन धरी आइ कीये मारे ॥ इति त्रेता ॥

न्रहरि रुप फार भार हेम किशिपु रछ

करी प्रहलाद बालक की बामन जग ता

रे ॥ परशु धार भार हरयो रामचन्द हनन

कहयो कृस्न अज बुद्ध कलि भूमिभर उ

तारे ॥ इति आभीरी दशावतार परिछेदः

आ.रा.
१

ॐ अथ आभीरी रागिनी प्रारंभः॥ येह हिंडोल की
भार्या है। भीमपलासी सिंदरा बरवा स्वर से युता
षड्जोंशश्च ग्रह न्यासे ऋषभो स्वर वर्जिता यामे
तृतीये दिवसः आभीरी गीयते बुधैः॥ इति भरतम
तेन॥ अरु येह रागिनी भीमपलासी सिंदरा और
बरवा के मिलाप में येह बनती है। अरु कही ग्रज

१

री देसकार कल्यान के मिलाप सें भी येह बनती
है अरु येह रागिनी षाडव के स्वरकी है इसमें रि
षभ वर्जित है अरु इसका अंश न्यास ग्रह धैवत
स्वरहै। कहीं षड्ज स्वरभी कहाहै अरु इसका
समय तीसरा प्रहर दिनका है अरु इसका चला
देवता है अरु नमहू ऋषि है उष्णिक छंद है॥

आ॰ रा॰
२

ओबीज है आउर्भूतमनोभवा मध्यानायका है और द
त्त नायक है अरु शृंगार रस है अरु इसका वर्षा ऋतु
है ॥ अथ आभीरी रागिनी ध्यानम् ॥ ॐ विलोडयेती
दधिमन्थ भांडे गंभीर नाभि श्चवरा नि गौरी पीनस्त
नी कुंडल जुष्ट गंडा माभीरिकोक्ता हृदयेश्य भीता
अथ भाषा ध्यानम् ॥ भाजन मेंथ विलोवति है ।

२

दयि रूप वती अति ओप भरी है। नाभी गंभीर सुपी
न उरोज सों कठिन बनै सब भांति खरी है। शोभि
त गोर शरीर महोवर कुंडल लोल कपोल धरी
री है। वासगहै कछु मानस मे अनुरागिनि राग
नि सो अभिरी है॥ अथ प्रादुर्भूतमनोभवा मध्याना
यकालक्षणम्। सवैया। आजमै देषि है गोप सुता

प्रा॰ रा॰
२
3

एक होइन ऐसी सरीर की जाई। देषत नहीं रहिये उति
देह की देषतें ओर न देषी सुहाई। एक हिं वेक वि
लोकनि ऊपर वारौं विला कि विलोकनि काई।
केशवदास कलानिध मौं वर बूझिये कामकि।
मेरो बनाई॥ प्रथ दत्तनायक लक्षणम॥ सवैया
सोक समै ललना मिलि आइ घरो जहां नंदला

२

ला अलबेलो। खेलन को निसि चांदनि मोहि ब

नैन मतो मनमांफ सहेलो। आपनी आपनी पौ

र बनाइके बैन कह्यो सगरीन न बेलो। त्यों हसि

कै ब्रजराज कह्यो अब आज हमारे हिं पौर में

खेलो॥ अथ शृंगार रस लक्षणम्। सवैया।

आनप्रिया प्रिया आनंद सों विपरीत रची रति

आ॰रा॰
४
4

सो कसबै है। काम कलोलन मै अभिराम रही
द्युति त्यों कल किं कनिकी है। आनन की उजि
यारी परी सम बिंब समेत डरो जल मैं है। वेद
की वेदनी के पर मै मन वेद पषान पहार चलै
है॥ अथ आभीरी रागिनी मायनम्॥ ॐ अस्याश्री
आभीरी रागिनी मंत्रस्य नमन् ऋषि उल्लिक।

४

छंदः ब्रह्मादेवता ऐं बीजं अभीष्ट फल सिद्धयर्थे श्री
भीरी रागिनी जपे विनियोगः ॥ अथ करन्यासः
ॐ श्रां अंगुष्टकाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासे ।
सर्वं कुर्यात् ॥ अथ पूजा विधाय ॥ आवाहने । आस
ने । पाद्ये । अर्घ्ये । आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते
गंधे । अक्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे । नैवेद्ये । दक्षिणा ।

आ०रा० प्रदक्षिणं। पुनराचवनीयम्॥ इति आभीरी रागिणी म
५ वें पूजनं कुर्यात॥ अथ आभीरी रागिनी मंत्रः॥ ॐ आ
5 आभीर्यै नमः ॐ॥ इति मंत्रः॥ अथ जप मंख्या। सप्त
दश लक्षे दश सहस्त्र॥ अथ आभीरी देवता मंत्रः
ॐ ब्रह्माणि नमः ॐ॥ तस्य ध्यानम्॥ ॐ ब्रह्माणि र
क्तवर्णाभे। पीत वस्त्रे रले कृते। चतुर्भुजे चतुर्व

ॐ म स्तवे स्कवि हस्तकम् ॥ इति देवताध्याने

अब आभीरी रागिनी का येह ठाठ है ॥ खड्ज

सम रहता है । इसमें रिषभ वर्जित है । गंधा

र उतरा । मध्यम चडा । और उतरा भी लगता

है । पंचम सम रहता है । धैवत उतरा । निषा

द उतरा ॥ येह आभीरी रागिनी का ठाठ कही

आ॰ रा
६

है॥ अथ सरगमः॥ सागमगसापगसानीधमग।

सानीध॥ इतिअस्थाई॥ मपधसाम धसानीध।

पमगसा॥ इतिअंतरा॥ अब आभीरी रागिनी

की गत येह कहिते है॥ डिढ डा डिढ डाढा डा

डा ढा डिढ डा डिढ डा ढा डाडा ढा। इतिअस्थाई।

डिढ डा डिढ डाढा डा डा ढा डिढ डा डिढ डाढा

६

6

उइा ॥ इति श्रेनरा ॥ अथास्याप्रलापः ॥ ननरी

इना आनन उननं उआनन अदतनरी नने न

ना उननना आनरा ननन रनु नानुम ॥ इतिस्या

ई ॥ अथ श्रेनरा ॥ तननं अदनने आनन नुम् ना

नुनै नना नन नरी नना आन नान ननुम् ननु

नरीन नानुरी रना नना आन नान आन नान रा

सं॰ रा॰ न तानम् ॥ अथ गानमाह ॥ रागिनी आभीरी ताल

८ ४ ॥

८

दे॰रा
१

ॐ अथ देवगिरी रागिनी प्रारंभः॥ येह हिंडोल की भार्या है। षड्जोंश ग्रहे न्यासे पूर्णा देव गिरी मता दिवसे प्रथमे यामे गीयते विडषै जिनैः॥ अरु इ सका अंश न्यास ग्रह षड्ज स्वर है कहीं गंधार भी कहा है येह रागिनी संपूर्ण सात स्वर की है अरु विहाग अलैया के मिलाप से येह देवगिरी बन

२

ती है अरु इसका समय प्रातः काल में गाई जाती
है ऋतु इसका शिशिर है अरु ब्रह्मा देवता है और
इसका ब्रह्मा ही ऋषि है उष्णिक छंद है देबीज
है अरु समस्त रसकोविदा प्रौढ़ा नायका और द
त्तनायक है अरु इसका शृंगार रस है ॥ अथ दे
वगिरी रागिनी ध्यानम् ॥ कादंबिनी घणामनत्तुः

दे॰ रा॰
२

सुवेशा। नेग लनी सुंदर हार युक्ता। चित्रोबरा मन
चकोर नेत्रा। मदालसा देवगिरी प्रदिष्टा॥ अथभा
षाध्यानम्। सवैया। अत ही अभि राम लसै ननसा
म सुजीतिलई उति स्याम सिरी। पीन उरोज उतंग
वने गरे हार परे तिय पोनि खरी। मन चकोरके।
नैनन की छवि नैनन मै अति आनजरी। हरि व

२

हाम अंग सचौनिचनी यह राजति रागनि देव-
गिरी ॥ अथ समस्त रसकोविदा प्रौढा नायकल
क्षणम। कवित। देखी है गुपाल एक गोपिका
अनूप रूप सोनेते सलोनी वास सोंधेते सवाई।
है। सोभाई सुभाई अवतार लीनो वन स्यामकि
धौं दामनी धौं कामिनी ह्वै आई है। देवी कोई।

दे॰ रा॰
३

3

दानवीन मानवीन होय ऐसी मानवीन होइ मा
इ भारती पढाई है। केशोदास सब साव साय
नकी सिद्धि यह मेरे जाने मेनही सो मैनका।
की जाई है॥ अथ दक्ष नायक लक्षणम्। स
वैया॥ चित चोप चितेवेकी जैसी यहै अरु तै
सोहि भाति उरान त्यैने। अरु जैसे हिं कोमल।

३

बाल गुपाल के मोहिन है नहि भाति मनै । गुन ते।
मेई हास विलास सबै ऊते जैसेई केसव कौन गनै।
साषि ते कहैं ज्ञान वधूके अधीन है सा परतीक कि
यौं सपनै ॥ अथ श्रृंगार रस लक्षणम्। सवैया।
बन में वृषभान कुमारि मुरारि रमै रुचि सों रस
रूप पियैं। कल कूजित पूजित कामकला वि

दे॰रा॰
४

परीति रची रति केलि कियें। मनि सोभित स्याम ज
गाई जरी अति चौकि चले चल चारु हियें। मघ तूल
के फूल फूलावनि केशव भानु मनो शशि अंक
लियैं॥ अथ देवगिरी साधनम्॥ ॐ अस्याश्री देव
गिरी रागिनी मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि उष्णिक छंद:
ब्रह्मा देवता दैं बीजे अभीष्ट फल सिद्धयें देवगि

रागिनी जपेविनियोगः अथ कर न्यासः। ॐ दें

श्रेगुष्टकाभ्यांनमः॥ एवं हृदयादि न्यासे सर्वं कुर्या

त॥ अथ पूजां विधाय॥ आवाहने। आसने। पाद्ये

अर्घ्ये। आचमनीये। वस्त्रे। यज्ञोपवीते। गंधे। अक्ष

ते पुष्पे। धूपे। दीपे। नैवेद्ये। दक्षिणा। प्रदक्षिणा

पुनराचमनीयम॥ इति देवागिरी सर्वं पूजनं कु

दे. रा. ५

5

यैन ॥ अथ देवगिरी रागिनी मंत्रः ॥ ॐ दें देवगि
र्यै नमः ॐ ॥ अथ जप संख्या । एकादश लक्षम्
मम सहस्रे ॥ अथ देवगिरी रागिनी देवता मंत्रः
ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ॐ ॥ ब्रह्मध्यानम् ॥ ॐ ब्रह्म
णे रक्त वर्णाभे पीतवस्त्रे रले कृते । चतु र्भुजे
चतुर्वक्त्रे म स्तके स्ताविहस्तकम् ॥ इतिध्याने

५

अब देवगिरी रागिनी का येह ठाठ है ।। खड्ज स
म रहता है । ऋषभ चड़ा । गंधार चड़ा । मध्यम च
ड़ा और उतरा । पंचम सम रहता है । धैवत चड़ा
निषाद चड़ा ।। अथ देवगिरी सर्गमः ।। ताल-३॥ सानिधनी
पनिधनिसानिनिसारेसा २ गरेनीसारेनीसानीनी
सारेसा २ रेरे गग मरे मपमपगमगरेसानीनी ।

दे॰ रा॰
६

6

सारेसा ॥ इतिस्थाई ॥ अथअंतरा ॥ नीधपमपगाम
पनीधनीसानीनीसारेसा १ नीसाधपमपगामग
रेधनीरेसागरेसानीनीसरेसा ॥ इति सरगमः ॥

अब रागिनी देवगिरी का गान येह है ॥ डिह डा
डिह डा ढाडा डाढा । डिह डा डिह डा ढा डाडा ।
ढा । डिह डाडिह डाढा डाडाढा । डिह डा डिह ।

डाढा डा डा ढा ॥ इतिस्थाई ॥ डिढ डा डिढ डाढा ।

डा डा ढा । डिढ डा डिढ डाढाडाडाढा । डिढ डा ।

डिढ डा ढा डा डा ढा । डिढ डा डिढ डाढा डाडाढा

इति स्तेनरा ॥ अथारण्यालापः ॥ ननरी इना आन

न उनन उआनन अदतनरी हने नना उनननाः ।

आनरा ननन रन नानम ॥ इति प्रस्तायी ॥ अथ

दे. रा.

२प २प २नि २सं २रे २सं २नि २प
धेनरा ॥ ननन धदनने धानन नुम् नानने नना नेन

२नि २सं २नि २प २प २म २प २म २ग २म
नरी नना धान नान ननुम् नन नरीन नानुरी रना।

२रे २प २म २ग २रे २सं २सं
नना धान नान धान नान रान नानुम् ॥ अथ ध्रुव

पद गाने माह ॥ रागिनी देवगिरी ध्रुवपद ताल ४।

अथ देवगिरी रागिनी ब्रल परिच्छेद माह ध्रु

वपद ताल चार ।ध। परमेश्वर जगदीश्वर ।

चिदानंद अगम निगम नेति नेति त्याग अ

नत तत्स्वरूप धारी ॥ इति अस्थायी ॥ सर्व

व्यापि पुन अहषण कथन कउ करन सके ।

कैसे कउ स्तवन करे चेतन चित धारी ॥

ग.दे.

इतिअंतरा ॥ उपमा कउ कैसे कहे पवन वहेदे
ह छुहे स्पर्श रहित सर्व व्यापि नभहि शून्य
सारी ॥ तेज ताप देह करे कृमिम जग सारि
भरे प्रलष रूप बालनियी नवहि कला भा
री ॥ इत्याभोगः ॥ ॥ रागिनी देवगिरी ध्रुवप
द ब्रह्म ताल चार ध ॥ योगीश्वर योग गम्य ।

योग विना नाहि मिले सर्व न्यास योग विना

नाहि सिद्धि पारी ॥ इतिअस्थायी ॥ चारीजना

न्यास कीयो कर्म धर्म त्याग दीयो नवहि यो

ग नाहि कीयो उभय भ्रष्ट भारी ॥ इत्यंतरा ॥

न्यास योग युक्त सन्त नवहि गती पाए केन

माया छल लोभ हीन साधु हति चारी ॥

रा॰दे॰

बाल निधी परम पुरुष संगति कर ज्ञान पाय

थाइ होइ एक रूप हटे भ्रांति सारी ॥ इत्याभो

गः ॥ इति देवगिरी रागिनी ब्रह्मपरिच्छेदः ॥

अथ देवगिरी रागिनी दशावतार परिछेदमा

ह ध्रुवपद ताल चार।धा। जगत प्रभु हिं जग

त पाल जगत सकल पर रहो जगत विपति

हर करत नाना तन धोरे ॥ इति अस्थायी ॥

प्रलय भीत कठन हेत मत्स्य भयो धरयो गि

रि कछप हो भूमि हेत सूकर वपु धारे ॥

ग॰ ६॰

इति प्रेतरा ॥ प्रह्लाद भक्त क्लेश नाशन को नर
हरि भयो वामन हो देवन की आपद जग टारै
राम राम भार हरयो धेनुकारिहि विध हन्यो बु
द्ध बुद्धि हर करण बाल कल्कि नारै ॥ इत्याभोगः

इति देवगिरी रागिनी दशावतार परिच्छेदः ॥

मोद करण सभक्त पूजित चरण शरण विनो

दके ॥ इतिसरस्वती ॥ अरुण वर्ण स पीत वा

म सधारिणे तम वारणे कारणे सभि कर्मसा

धन वर विपाक सधारणे ॥ इतिश्वेतवा ॥

वाक वारिभजा करो मित कमल विमल प

वारके सम असमदा पयाण क वरपदके ।

रा॰ दे॰

प्रकारके ॥ प्राचि दक्षिण पश्चिमाश उदीचि ।

भाग विधायके चरण कंजम्न कुंद बालक से

विते भजनायके ॥ इत्याभोगः ॥ इति देवगि

री रागिनी सर्व परिच्छेदः ॥ ॥ समाप्तः

अथ देवगिरी रागिनी सूर्य परिछेद माह धु

२सा २रे २ग २म २ग २रे २सा

वपद ताल चार।१।अति प्रचंड मंडल रवि

२नि २ध २नि २सा २नि २ध २प २सा २ग २रे

परम ज्योति जगत भाग्य उदय होत सक।

२ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे २सा

ल लोक वैरागन मन कारैं ।। इति अस्थायी।।।

२प २ध २नि २सा २रे २सा २सा २रे २ग २म २ग २रे २सा २नि २ध

देव असुर नाग योगि ऋषि जपी तपी अपर

२प २ग २रे २ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे २सा

तवहि ध्यान हर्ष जात नितहि हृदय धारैं

ग. ६.

इतिश्रेतरा ॥ देहि प्राप्त रूप जगत चैतन हो वा

परहीं अग्नि उदक दान करैं विविध कर्म चारैं।

जल सें सब प्रजा होत ज्योत पवैं अचैं जीव धरैं॥

प्राण बाल नहिं विषतंत्र भारैं ॥ इत्याभोगः॥

देवगिरी रागिनी ध्रुवपद सूर्य ताल गीत ५ चार। ४॥

उष्म किरण पवित्र दर्शन अंब जात प्रबोधके

अथ देवगिरी रागिनी शक्ति परि छेद माह

ध्रुवपद ताल चार ।४। हरि माया मोह क

रणि भरणि जगत विविध भांत देह गेह ।

विनता सुत मम हि भ्रांति करणी ।। इति

अस्थायी ।। पृथिवी धर राय भाय रायके ।

ज थाइ भरै धरै भूमि खिण अहधप करी

ग. दे.

वहुर यरिणी ॥ इतिश्वेतरा ॥ सैना मम प्रब

ल रही बीति करी ऊटवही थो क भोक कउ

न सहे अरिन गनन दरणी ॥ जगत सकल

भूपन बल हर पूर छिन हिं करो धरो भूमि

अखिल बाल वैसि भूलि भरणी ॥ इत्याभो

गः ॥ रागिनी देवगिरी ध्रुवपद ताल चार ॥

श्री शक्ति सकल जगत कर्म धर्म धार रही

नाम बिना विद्वज्जन मूक सभा माथें ।। ६

तिष्ठस्थायी ।। रमानाथ वाणि नाथ उमाना

थ सकल देव संश्रीकर युक्तसहत तासवि

ना आर्थे ।। इतिश्रेतरा ।। इंदिरा सें मंदिर ह

रि करण होत अर्चन युत सराहि सरम क्र

रा॰ दे॰

प दूप शुक्क हर्म सोये ॥ जैसे जग राज काज

रमा विना शतहि लक्क बाल विष्र वरण

शरण सक्क मन शराये ॥ इति आभोगः ॥

इति देवगिरी रागिनी शक्ति परिछेदः ॥

अथ देवगिरी रागिनी गणेश परिछेद माह।

ध्रुवपद ताल चार। धा। ढुंडि राज काज कर

ण हरण विघ्न मग्न जनन मनन करहि नम

न करैं जो पुरुष ज्ञानी ॥ इति अस्थायी ॥ खं

ड दंड मंडित भाव भावि रवि जनि पाउपरी

पीत वसन कटिहि वीत क्रीट मकुट भानी

रा. दे.

इति धेतरा ॥ नाग जनित सुत हि गोपि मात
मात गौरि तात जग विषात भाल जात गि
रधा ध्यात ध्यानी ॥ गण नायिक सवे दा
यिक बुद्धि विशाद करण हार धार रहो बा
लनिधी निज हि इष्ट मानी ॥ इति आभोगः
देवगिरी रागिनी ध्रुवपद गणेश ताल । ४ ।

गायिक वरदायिक नित गणनायिक ध्या
न धरो हरो सकल विकल बुद्धि ऋद्धि सि
द्धि पावो ॥ इति अस्थायी ॥ जाके पगसेवन
तें देवन की विपद हरी धरीधीर अरिन
वीर भीर कीन पावो ॥ इति अंतरा ॥ अस
रन गण चरण हर हर उडै समर पवन

गा॰ दे॰

अल्प शुष्क लगन निचय जिस विनाश जावो

ऐसे करि वदन रदन एक केश चरण सद॰

न बाललिये वास करन मन अनेद लावो॰

इत्याभोगः॥ इति देवगिरी रागिनी गणेश

परिछेदः॥ ०॥

अथ देवगिरी रागिनी विस्नु परिछेद माह

ध्रुवपद ताल चार ॥१॥ जगत जनन विष

रमन सु मनन गल माल परी धरी खोरम

लय जात मुकुट शिखर सोहैं ॥ इति अस्था

यी ॥ ध्यान हि प्रणाम रमा वाम चरण धरत।

केज कर निमर्दन कर मोद करत चपल।

रा॰दे॰

२ग २म २ग २रे २सा २सा २ग २रे

चमक जोहै ॥ इतिश्रेतरा ॥ केश कंज गदा ।

२ग २प २ध २प २ग २रे २सा १नि १ध २सा २रे

चक्र रूपधारि पासबसैं नैसैं सकल सुखर

२सा २सा २ग पै २ध २प २प २ध २नि २सा

न दल भीति धीर बोहैं ॥ पीत बसन मेद

२रे २सा २सा २रे २ग २म २ग २रे २सा २नि २ध २प २ग २रे

हमन पद्मनाभ चरण शरण बालनिधी ।

२रे २ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे २सा

धार रहो सकल पाप धोहैं ॥ इत्याभोगः ॥

रागिनी देवगिरी ध्रुवपद विस्नु ताल ।४।

रमा रमन भक्त भरण शरणागत त्राण कर

ण हरण पाप विविध भंजन सात्विक तनु धा-

री ॥ इति अस्थायी ॥ शेष शायन मयन पि-

ता विपति हरण देवनकी कृपासिंधु दीन

बंधु द्रुपत लाज भारी ॥ अंतरा ॥ दुर्वासा।

शाप कटन अंबरीष रक्षकरन धराणि ध-

गा॰दे॰

राग रदन शिखर यज्ञ सकल मारी ॥ प्रहला
द भरण हेम किशिपु उरस फारदीयो बाल
नियी पाद पद्म षट् पद रस चारी । इत्याभोगः

इति देवगीरी रागिनी विलु परि छेदः ॥ ॥

अथ देवगिरी रागिनी शिव परिच्छेदमाह ॥

ध्रुवपद सतीचरित्रे ताल चार । ४ । सतीपति
हिं शंकर शिव परमेष्ठि सभा मांझ बैठे निज
लाभ मगन भगाण पशिर धारैं ॥ इतिग्रस्था
यी ॥ तहां दक्षराय आन थारि भारि देख उ
ठी सभा बल धार्वं बिना अपर मारैं ॥ इति अ

रा.दे.

नरा ॥ तबहि दल कुपित करो मुनि रुद्र स

कल सभा योगनही सभारुद्र लेद भसम वारैं

भूतन सम नृत्य करै नरकपाल हाथ धरै स्र

होकर मृतामती मथा उदक गारैं ॥ जामा

ता वाणिमात्र नमन नही ममहि करी धरी

लीक हडनकी हर करण वारैं ॥ यावाणी

सनहि नेदि क्रोपित कहो समहि सदा शोभ

वैर हीन कीन वैर ग्रन्त भोरैं ॥ धूमपेष्य कर्म

सक्त परम तत्व विमाव रहैं विप्र वचन हित

हट कर्म डोरैं ॥ उपा लेभ विप्रन सन भय

हिं शापे ~~शिव सुधार मोन मान शुक्र नगाम~~

शोभ भक्त मघ मोस एजैं नित हृढ पावड्हा

ग.दे.

रैं ।। सुनहि बिमन धीर धार शिवर गये शिव सु

धार मौन मान युक्त सगाण वर किलास चारैं ।।

सेपद को मदहि धार दलयाग युक्त भयो गयो

सकल देव पुंजवर बिमान भारैं ।। निज निज

परवार धार डंडभि रव धूम धाम देष मनी प

निहिं कहो हमभी तहो चारैं ।। ब्राह्मण गरु ।

निनहिं पिता विनाहेत जात सदा श्राप ईशामग

ज सता देहि महि तारै ॥ सुन ईश्वर कहितम

यो तवहि जाइ विना हूत थन उर्मद वक्र हरि

नाहि वाण मारै ॥ कुपित देष सतीगई हरहिं

त्याग याग जहां देषे नही वोले कउ दत्तभीति

यारै ॥ मान हीन कोपवती शंभ ध्यान हीये।

गा० दे०

3

कीये अग्निकुंड ज्वालदिये सकल देह जारैं ॥ सुन
ईश्वर जटा फटक फटति कीयो वीरभद्र धाइ ।
गयो क्रोध पुंज यज्ञ नाश कारैं ॥ कुंडन मैं मूत्र ।
दीयो ऋषि देवन हरकीयो दत्त शिर उडाइ दी
यो नभ मे खपर सारैं ॥ यज्ञ नाश देव लोक जोए
आदि शंभु विनै अजशिर धर दत्त प्राण दीये ।

कहण मोरै ॥ बन बन बनवाणि बोलि शंकर

व्रति दल करी भै प्रसन्न शंकर नव बाल नि

थी तारै ॥ इत्याभोगः ॥ इति देवगिरी रागि ॥

नी शिव परिछेदः इति सती चरित्रम ॥ ६१ ॥

ग·दे·

अथ षट् रागस्य दशावतार परिछेद माह

२ग २मे २प २प

ध्रुवपद ताल चार ध ।। परम पुरुष परमे

२प २मे २ग २मे २प २प २प २मे २ग

श्वर निज भक्तन रक्षपाल काल रूप भार

२रे २सा २ग २रे २सा २प २सा

हरण यगणि डाव निवारी ।। इति अस्थायी

२मे २प २नि २रे २सा २सा २नि २प २प २मे २ग २मे

मछ कछ वर वराह नरहरि असुर उरस फा

२प २प २मे २ग २रे २सा २प २सा २ग २रे २सा २प

रि वामन भवि नारण हित पगहि गांगवा

री ॥ इति प्रेतरा ॥ परभ्र थार भार ह्रतो मैत ।
वेधु सिंधुतलो रावण को मार अमर पीर ।
हरी मारी ॥ कमलाग्रज बुद्ध कलकि विविध
असुर घातदीये दशविध वपुधारि कारि
वाल मोद भारी ॥ इति आभोगः ॥ इति षट्
राग स्य दशावतार परिच्छेदः ॥ ॥

नि रे सै निय नि य पै मै गरे ग ग मै

हर करत ध्यान धरो छाड़ देऔ डोर सभी जगत को खट

ग रे सै

पटवै

अथ गंधार रागस्य शिव परिछेद माह ॥

झपताल चार ४ ॥ शिवशंभू शूल

हाथ गौरीनाथ गिरिनिवास भक्त सदा

द भगवान ॥ इतिअस्थायी ॥ नेदिना

थ उमानाथ भोलानाथ विश्वनाथ बा

मकाम जरत जगत कर निवास धाम

ग. गे.

ध्यान ॥ इतिश्चेतरा ॥ देवन देव त्रिपुरारी ली

ये सेग भूतकारी भालचंद्रधारी धर्मधाम

ग्रग्रमाण ॥ बेदत जाह सर ग्रसर प्रोषम

नकादिक नारदादि नित निरंतर न्टतध्या

न मनमान ॥ इत्याभोगः ॥ राग गंधार क्र

वपद शिवजी ताल चार ष ॥ पशुपति गि

रिजा गिरीश देवन देव जगधीश हर य

रन डमरू पानी ॥ इतिअस्थायी ॥ जासु

प्रभाव भव काननकीर स्रवन भये अम

र अमर गाय परत करण अभय दानी ॥

इतिअन्तरा ॥ शंकर महादेव वृषभध्वज

जटाधारी वारि गंग स्रवत सीस दरसन ।

ग·गे·

२ग २रे रे २सं २प म २ध २नि २सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं

ग्रणहानी ॥ भक्त मेडमाल गोरे धरे ध्यालश्रा

२रे २म २ध ध २नि ध २प २म २प म २ग २रे २रे २सं

मरण श्रेवर चरम वाह श्रेग श्रेग रज रमानी

इति आभोगः ॥ इति गंधार रागस्य शिव

परिछेदः ॥·ः·॥ः

अथ गंधार रागस्य गणेश परिछेद माह॰

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ एक दसन सिंह
र वदन मदन गुण प्रमोद विघ्न विदल
न नाम ॥ इति अस्थायी ॥ रिद्ध सिद्ध दाय
क गणनायक निगुन परम प्रणम पुनि
जगत भगत भय भंजन पुरण काम ॥

ग. गे.

3

इति खेतरा ॥ उमासुत हरण शोक लोकवि
दित आदिदेव दमन दारिद्र दोष दुरित धा
नेद धाम ॥ सकल सुरन मो प्रधान शिव
सुत वर अभय दान गावत सनमान गुणि
सुजान अष्टयाम ॥ इति आभोग: ॥ रागगे
धार ध्रुवपद गणेश ताल चार ४ ॥

गणनराज विघन हरन भरण मोद मंगल

करण सजन साव प्रकास ।। इति स्थायी ।।

जो तोहि ध्यावै देव पावै मन वांछित का

म तेरो नाम रटत भव कटो जात विक

ट पास ।। इति अंतरा ।। लंबोदर गजानन

चार भुजन चार आयुध परशु पात्र कमा।

गा॰ गा॰

ल मोदक मथन जगत जनन धाम ॥ गौरी

सुवन सुरन मय प्रथम पूजि पतित पाव

न परम देव गहरो गंभीर धीरको निवा

स ॥ इत्याभोगः ॥ इति गंधार रागस्य गा

नोध्यायः परिच्छेदः ॥ ॥

अथ गंधार रागस्य सूर्य परिच्छेद माह ध्रुव

पद ताल चार ४ ॥ भास्करन मार्तंड भा

नु अरुन रवि दिनेस कश्यप कुल दिन ।

मान ॥ इति अस्थायी ॥ आदित्य कमलमि

त्र सूर सूरज तिमिर हरन करन धरणी

नभ प्रकाश जीवन जगत प्राण दान ॥

ग॰ग॰

5

इतिश्रेतरा ॥ दिनकर प्रभाकर उस किर-
न कोक सुखद उलूक दुख दमन समन
सुजन धाम भगवान ॥ जगत कौ प्रकाश
करन शरणागत उव विदलन सर्व ए
ति सर्वसाक्षी सर्वको आधार जान ॥ इत्या
भोगः ॥ राग गंधार सूर्य ध्रुवपद तालचार

तेरी त्रिष कौ आधार भानु देव नारायण

जोति करण जग मगात ।। इति अस्थायी

तेरी समान श्रेम पाये लोक लोयन मो ।

लोकि परत लोय लोवि लावन्य अवदा

न ।। इति अंतरा ।। तेरो उदय देखि होत ।

उदत सकल जीवजंत दरसि किरण केत्र

गा·गे·

कोक लोक शोक बिन सांत ॥ तपसि जोगि

जती मुनी विप्र संत सिद्ध साध गुनी ज्ञानि

भक्त सुजन ध्यानि ध्यान धरत प्रात ॥ ३

त्याभोग: ॥ इति गंधार रागस्य सर्व परि

छेदः ॥ ·:· ॥:

मोकों ध्यावत पावत पुरुष धाम विश्राम

अवर अर्थ धर्म काम मोक्ष फल चारी ॥

इतिअंतरा ॥ आदि शक्ति वाकवानी ई

श्वरी सरस्वती चतुर भुजी अष्टभुजी अ

ष्टदशा धारी ॥ मात तेरो सु जस विमल

छायरह्यो सकल भवन गावत गणीपा

गा· गे·

२म २पे २प २म २ग २रे २सं

वत कैंठ राग स्वर सुखकारी ॥ इत्याभोगः ॥

इति गेयार राग स्य शक्ति परि छेदः ॥ ॥

अथ गंधार राग स्य विलं परिछेद माह फ

वध ताल चार ॥ मेरे मन नर हरि ना

म जिन रच्यो अखिल धाम काम क्रोध त

ज लोभ बह्यो जात संसार ॥ इति अस्थाई

जिन रच्यो स्वर्ग मनस्य और पाताल निरंजन

सोई साकार निस दिन जपले श्रीमरार ॥

रा॰गे॰

इतिश्रेतरा ॥ दीनबंधु दीनानाथ कटित ड

व देद फेद ताहे घरी पल छिनन बिसार

तानसेन कहे निरमल हीए भजीए भगवा

न मनुष जनम नहीं बारे बार ॥ इत्याभो॰

गः ।॰॰। राग गंधार बिस्नु ध्रुवपद ताल॰

बारथ ॥ दीनबंधु रमाविलास करणानी

अथ गंधार रागस्य दशावतार परिछेदमाह।

२सा २म २ग २प २ध २प

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ केसको अवतार मार

२म २ग २रे २सा २म २ग २प २ध २सा २नि २ध २प २म २ग २ध

अघासुर बक विदार मल्ल उछ मछ गार ग

२प २म २ग २रे २सा २प २म

वे अहारी स्याम ॥ इति अस्थायी ॥ ताडका।

२ध २नि २सा २ग २रे २सा २सा २नि २ध २प २म २ग २रे

दि असुर मार गोतम की पत्नी तार यहो।

२सा २म २म २ग २ध २प २म २ग २रे २सा

अवतार अवध दशरथ सुवन राम ॥ इति

गा॰ गे॰ ग्रन्तग ॥ परशुराम मनुज मृगराज रूप ध
र कीये चरित चारु दीन बंधु जगत भग
त सफल काम ॥ सूकर मकर कमठ बौ
ध कलकी अवतार बामन बलि मरार व
लोके बराज धाम ॥ इत्याभोगः ॥ इति गेया
र रागस्य दशावतार परिछेदः ॥ ॥

य न बु य पा र ब्र ल की नो जि न ष्ठ

वि व ट टा नो म म य में नें क ञ्छु वीज

गोनै। इतिस्थाई। सजल यवल पुनग पै ठ

नव विड वि स्ता र या को मा वा ग्र ह मे

र मा नो ढ ग पा ल ज टा टै नो। इत्यन्तरः

रा॰स॰ १५८४

प नि ध प म ग रि स म ध प ध

ज ल छायो प्र हम पव न मानो तै सो बु द

नि स नि ध प म ग रि ग म धे म ग

ति ल सो हाय प्रमीय बु द वर घ त या तैः

रि स नि ध रि स म ध नि स स ध नि स स नि

त रे ग न स स उ उ ग न जे त फ ल प

ध प म ग म ग रि ग ग म

य पं खि जीव जेत कमला मन प्र गम दी

म ध नि नि ध प म ग रि स

रव प्रगे बास देव नाम जे हर पीयत करना

र या वि य जा नो ॥ भैरव राग चारताल ॥ मा

यो मं य स द न म कुं द म र ली य र म

ख सो ह न स्ट दो हा स ॥ इत्यस्थाई ॥ क म

ल न य न वा स दे व प रं म ब ल प र मे

ख र वि स ए र न ग्रा म ॥ इत्यंतरः ॥ ना ग

रा॰ स॰
२५५

य न नि रा का र ब न वा री वा म न वि ट

ल शे ख व क्र ग दा प द म सो ह न

है पा म ॥ प त न पा व न बि दं जो को

ह्म पा ल घा ल भ ग त व त म लं म

द न रा य के नि त जियश्रा मं ॥ रागभैरव वा

र नार। ब्रह्मस्तुति ॥ प्या रे तू ही ब्र ह्म तू ही

वि ष्णु तू ही रु द्र तू ही शि व श क्ति तू ही

सू र ज तू ही ग णे ऽऽऽऽ श ॥ इति स्थायी ॥

अथ अंतरा ॥ ज ल थ ल प व न पा नी तू

ही ते ज तू ही आ का श तू ही अ ग्नि तू ही

गा॰स
३१६९

ज्यो ति र्हे ही स्व रे ऽऽ ष्ठा ॥ अथ आभोग ॥ र्हे ही

उ व र्हे ही नी व र्हे ही हैं म भ न के बी वं

र्हे ही वे द र्हे ही दि ने ष्ठा र्हे ही प क र्हे ही

अ ने क गु रु वे ला र्हे ही अ ले ख बै ज्र

वा ब रो र्हे ही स ङ्ग र दा र तो हे तें क टे

ध प प ... ग म प ध

क ले श ॥ राग भैरव चौताल ध्रुवपद ॥ तू प नि रे ।

प म मगरि रिग म ग रि स रे स नि ध प म म

ज न म्रे ज न र ह त ता ह व र न वे को ऽऽऽऽ

ग म ध नि स ग रे ग म प प ध प म ग रि

उ द त भ ए छे हो श्रा ल र भ दा गे हो ग्रा

स ... म ध नि स स स नि ध ध

न ॥ इति प्रथमस्थायी ॥ तो को भे द न हिं पा व त ।

नि ध प प म ग म रे ग म ग रे ग ग

शि व स न का दि क ब्र ला ना र द शे ष ।

गा॰ स॰
२२६०

22

कै उ ब ला शि व च ट व्या प क को ट को ट

ब ला उ र चि त दे व लै हो बु य वा न ॥ इति

श्वेतरा: ॥ आ दि श्वे त म ध्य वो ही त्रै लो क

व रा व र वा ही की इ छा ते क र वि मा ।

न ता न मै न के प्र भ स ब ज ग व्या ।

प र हो ए र ण ब ल ब्र व ना सी नि रं का र ब्र

व ना सी भ ग वा न ॥ राग भैरव चौताल ध्रुपद।

ब्र ने त ब्र ह्मा ड के ना य क प रे ब ल श्री

श्री य र म हा रा ज ॥ इतयस्थाई ॥ कृ पा सिं यु

भ क पा ल स्त्र व क र ण कृ पा ल ग री ब।

गा.स.
२३

23

रि सं सं ग ग म म प पं प नि

नि वा ज ॥ इत्येतरः ॥ य ह वि न ती ह न ली

सं नि नि प पं म ग ग पं म ग रे सं नि ध रे सं सं ग म ग रे सं म

जे ते रे श्रे त न हीं तू श्र ने त ए जो मो हे वा।

प नी प नी सं नि प पं म ग रे सं

हूं म ज प र जा प उ व भो ज ॥ इति आभोगः

म प नी सं सं प प नी सं रे सं नी प पं पं म

बै न्नू के श्र भु श्रा दि श्र ल घ श्र गो च र नि रं ज

म ग म ग रे सं म प नी नी सं सं रे रे

न नि रं का र भ ज का ज को टि को टि हू प

य रे से त न सि र ता ज ॥ राग भैरव चौताल ।

ध्रुपद ॥ ज य मा यो म क्रु द म्व रा र म यु

स्व द न म द न मो ह न म न रं ज न म न

भा म न ज ग त प ती ज ग न्ना थ ज ग जी

व न ज ग बे य न ज ग पा व न ज ग श्र ग

गा॰ स॰
२४

24

म ग ग सै ग म प प प प नी सै नी

टा व न। इतिश्रेतरः॥ कृ स के श व क रु णा

प प म ग म ग रे सै सै सै नी सै सै रे ग म ग रे

ना य के सा री के स का ल का लि ना गा।

नी नी सै सै नी प नी रे सै

ना य न का म ज ना व न॥ इतिसामभोग॥

म प नी सै सै रे स रे सै नी प प म म ग रे सै

वै कुं ठ ना य वि हा रि व द्री वा म न वि स्तु

सै नी प नि सै ग म नी ग रे सै ग म प

व ल्ल भ वा रा ह वि ठ ल बै जू बा व रे ग्रा न

१ १ २ २
प नि ग य

ज वा व न ॥ राग भैरव चौताल ॥

ग. स.
२५

25

19

रागिनी रामकली ताल ४ गंगास्तुतिः गंगाकी

तरंग देखि सभ जग तरो जात सुर नर मुनिनकों ला

गत हित चित्त इतिअस्थाई केते कछल तले पट कायर

कसत पापी तिनहूके पाप भाजत किते ॥ इत्यंतरा॰ अथ

आभोग: ब्रह्मलोक विस्नलोक रुद्रलोक कथा जाकी

जैसी भावना ताके काज सफल किते ॥ गंगाभक्त आवे

गां

४

पाप रोवै पाप आगे जमहून रोवै चिन्द्रश्रीगम्नरोवै कागद

चिते चिते ॥ रागिनी रामकली ताल झंप जयति

श्रीराधिके सकल सुखसाधिके तरुणि मणि नित्य नौतन

न किशोरी ॥ इति प्रथमस्थाई कृष्ण तन नील घन रूप

कौ चातकी कृष्ण मुख हिम किरण की चकोरी ॥ इति

श्रेनरा ॥ (अथ आभोग) कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मि

नी कुसुम रंग सुराज बंधन सुडोरी कुसुम अनुराग मकरंद की
मधुकरी कुसुम रंग गानरस सिंधवोरी परम अद्भुत अलौ
किक मेरी गति लखि मानस सांवरे रंग अंग गोरी ॥ औरंग
छवि कहुं मैना देखो सुमो चतुर चौसठ कला नदपि भोरी ॥
विसरव परि चितने चित जोको भ्रम करत निज नाह की
चित चोरी प्रकृत इह गदाधर कहत कैसें बने उपमित महि
मा इते वृद्धियोरी· नकाणि· ॥ रागिनी रामकली तालझंपा

रा॰
९
10

मानिनी नायका हनीवाक्य राधाको मानिनी मान जिन मा
न पतोकरैं आपुपाइन परैं नाथतेरे॰ आप ॥ इतिप्रस्थाई
दरस जाको करत जगत नरसे सदा सोनोरे कटक तेरो वर
नहेरै ॥ इतिअंतरा ॥ अथआभोगः हौंकहिती समति उ
टी वैरा मिलमीनसो मेरोहित वचन जिनभूलि फेरै ॥ र
सिक प्रीतम संग विहर रस रंगसो कंत उरव
अनंग को सब निवेरैं आप ॥

रागिनी रामकली ताल ४ ध्रुवपद शास्त्रीके नेही ग्रंथे आ
दि भवानी अस्तुर सिंघारनि आनंदी कुवरी भक्त उधारनी म
हारानी ॥ इतिअस्थाई उमा शिवा कराल वदनी त्रिशूल
सूल पर धरनी ज्वालामुखी जोगमाया जगत समानी ॥
इत्यंतरा अथआभोगः गौरी गिरजा अरिहि सिद्ध दानी
करडू कृपा काली दुष्ट दमिनी असुर रक्त पानी ॥ सवरा

धा नि सं नि सं रें नि सं नि धा नि धा पे मा पे मा सं ग रे

सा॰ सा॰ सभ काम करो दासन पर दया धरो धीरज पर सारदा स्वरस

११ नि सं रे सं पे

नी वाक वानी ॥

शक्तीके २

सं

गणेशके ध्रुवपद रागिनी राम कली ताल ४ ॥ शिव

म प सं प ध नि सं नि ध प ध प ध म ध प ग रे

सुत गणपत तैं ज्ञान पावैं अनेक प्रकारन जानैं अनहो

ग म ग रे सं म नि ध नि सं नि सं रे सं नि ध

त्तुय आवै ॥ इतिअस्थाई गायन विद्या सब निगम मूल

प म ग रे ग म ग रे सं ध प ध म ध म म

चार वाजे स्वर वानी सौं गावैं ॥ अंतरा सिरजा कौ नंदन

ग रे ग म ग रे सं म प ध प म प म

आनंद कंद जग वंदन सब देवनमैं सोहावै ॥ अथआभोग:

म नि ध नि ध नि सं नि रे नि नि ध ध प म म ग रे ग म ग रे सं

लछमनदास पै अपनी मया कीजो दीजो मन इछा फल पावै

रा· १२

सं मा पं मा पं

रागिनी राम कली ताल ४ एकदंत गजवदन विनाय

धा सं निधा पं मा ग मा ग सं

क विघ्न विनासन है सुख दाइ ॥ इति अस्थाई अंतरा·

मा नि धा नि सं सं नि रे रे नि धा धा धा पं मा ग रे

लंबोदर गजानन जगवंदन शिव सुत ढूंढिराज सब

ग मा ग सं मा पं पं

वरदाइ ॥ इति अंतरा आभोगः गौरीसुत गणेश

पं धा नि संनिधा धा पं मा ग रे मा मा रे ग रे सं मा

मूषक वाहन परमा धर शोकर सुवन रिद्ध सिद्ध नव नि

पं मा निधा सं सं नि सं रे रे सं नि धा धा

ध दाई ॥ तानसेन तेरी अस्तुत करत काटें कलेश प्रथम

9-12

र सिंधु वास भक्तवत्सल भगवान ।। इति
ध्याई ।। शेष महेश सैन सुरनर मुनिन-
मोर दैन धेनु विप्र धरणि हरण त्रास मे
न सुख दान ।। इति श्रेतरा ।। नाभिकमल
अमल ह्वे ते चारि वदन प्रगट कीये करत
रटन चारवेद चारमुख सौं सुजान ।। शोव

ग.गे.

चक्र गदा पद्म पीतवसन गरुडवाहन मो
र मुकुट कर्ण कुंडल मकराकार विल
ध्यान ॥ इति श्रीभोगः ॥ इति गंधार रागस्य
विघ्न परि छेदः ॥ ०:० ॥:

अथ गंधार रागस्य शक्ति परिच्छेद माह ॥

झंपट ताल चार ४ ॥ तेरे तो सरस्वती च

टचट हर रही नाम धरायो वाक बानी ॥

इति अस्थायी ॥ जल थल मथपात जाल

पा भवानी जाते कहिय तनों को सरबानी

इति अंतरा ॥ कोट कटानि खडानि सम

रा॰गे॰ दीप परमानी जैसीन गर कोट रानी ॥ तो

नसैन को प्रसाद दीजो भवानी दयानी के

ठ पाठ ताल स्वर दे महा रानी ॥ इत्याभो

गः॥ राग गेयार् ध्रुवपद शक्ति ताल ४॥

शारदाभवानी भव भ्राम तोष लोकमानी

दीन दोख सोक हारी ॥ इति प्रस्थायी ॥

रेकार ॥ इति अस्थायी ॥ जल थल जीव ।
जंत अंड पिंड चर अचर रचो खिल अपर
अपार ॥ इति अंतरा ॥ नाना भेष नानारू
प राउर परमबल परमपुरुष परमजो
त परम अगार ॥ पारद अनंत कविको
विद गुण कथित थकत निगम नेतर ।

रा. के.

टत रतो थेत हार ॥ इतिआभोगः ॥ इतिके

दार रागस्य ब्रल परिछेदः ॥ ॥ ॥

ग्रथ रागनी गोंधार राग सा ब्रह्मपति छेद माहि। अ

वपद ताल चार ४॥ अवगत अविनाशी।

२नि २धु २ध २म २ग २रे २स २रे २म २ग २रे २स

अज अलाव लखो नजाय जोती प्रकाश॥

२धु २म २ध २नि २स २ध २नि २स २ग २रे

इति अस्थायी॥ मार्तंड सोम उडगान मरु

२स २नि २ध २धु २म २ग २रे २स २रे

न उदक अनल भूम कीन निरमान जास

२म २ग २रे २स २स

सकल अवि लास॥ इति अंतरा॥ एकही

गा॰ गे॰

अनेक रूप निर्गुण सगुण ब्रह्म निर्विकार

निराकार कहौं ठौर ठौर वास ॥ निरंजन

निराधार जाको आधार लिये लोक लोक

पाल प्रगट अमत होत भानभाम ॥ इत्या

भोगः ॥ राग गंधार ध्रुवपद ब्रह्म ताल ४

तेरी समझटना है घट घट आप रह्यो नि

गं॰ रा॰
१

ॐ अथ गंधार राग आरंभः ॥ येह गंधार राग संपूर्ण

है धैवतांश षड्ज न्यासः तीव्र मध्यम पञ्चम मंद षण

सावरी टोडी तेभ्यो गंधार संभवः इसका अंश न्या

स षड्ज धैवत स्वर है अरु आसावरी टोडी देशी के मिला

प में येह बनता है अरु इसका समय प्रातःकाल है

इसका ब्रह्मा देवता है अरु ब्रह्म ऋषि है उसिकछे

१

दहै गेबीजहै अरु स्वकीया नायका है अरु अनुकूल

नायक है अरु शांतिरसहै इसका शबद करतहै ॥ अ

थ ध्यानम ॥ आदाय वीणां रणयन्करेण गेगा॑ध्या

न निमग्न चित्तः योगासने मौलि जटा दधानो गेया

र रागः कथित स्तपस्वी ॥ अथ भाषा ध्यानम ।

सवैया । बीन बजाय रझाय रह्यो हरको हरध्यानः

गं॰रा॰
२

यरह्यो मन माँही ॥ ञ्रासन जोग गहे जति जैसौं मति की गति पार परै कछु नाँही ॥ पिंगल सीस धरे ध्रुव मान स भेष वसेष न जात सीहाँही ॥ भैरव को सत राग गंधार उदार मन्यो रस रंग महाँही ॥ ञ्रथ स्वकीया नायका लछनम् ॥ दोहा ॥ संपति विपति जु मन नैहू सदा एक अनु हार ताही स्वकीया जानिहो

२

मन क्रम वचन विचार ॥ अथ अनुकूल नायकलक्षण

म ॥ दोहा। प्रीति करै निज नारि सौ पर नारिन

प्रतिकूल ॥ केशव मन वच करम करि सो क

हिये अनुकूल ॥ अथ शृंगार रस लक्षणम् ॥ दोहा।

जोवर नर तिय पुरुष कों रुचिर विविध रस भाष ॥

ता सों रीझत सु कवि हैं सो शृंगार रस राव ॥ सवैया

गं॰रा॰
२

दोऊ उहूं पहि गावत हूनारि दोऊ उहूं सिर बाथत पा
यैं ॥ दोऊ उहूं के सिंगारत श्रेग गारे लागि दोऊ उहूं
ग्रन रागे ॥ प्रेम सनेह समोय रहे रस ष्यालन मै म
गरी निसि जायैं ॥ दोऊ उहूंन सौं मंन करैं पुनि दोऊ
उहूंन मना वन लागैं ॥ अथ गंधार राग विनियोगः
ऊँ अस्यश्री गंधार राग मंत्रस्य नमह ऋषिः ब्रह्मा दे

२

वना उम्मिक छंदः। गं बीजं धर्मार्थ काम मोक्षार्थे गंथा

र नाग जपे विनियोगः॥ अथ कर न्यासः। गं अंगुष्ठका

भ्यां नमः। एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात्। अथ पूजो

विधाय॥ आसनं पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं वस्त्रं यज्ञो

पवीतं गंधं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां पु

नराचमनीयम्। सर्वं पूजनं कुर्यात्॥ अथ गंधार नाग

गं॰ रा॰
४

मंत्रः। ॐ गं गंधाराय नमः ॐ इति मंत्रः॥ जप संख्या ७""

सहस्र लक्ष जपः अथ गंधार राग देवता मंत्रः॥ ॐ ब्रह्मल

णे नमः ॐ॥ देवता ध्यानम्॥ ब्रह्माणं रक्त वर्णाभं पी

त वस्त्रै रलंकृतम् चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं स स्रुवं स्रुक विह

स्तकम्॥ इति देवता ध्यानम्॥ अब गंधार राग का ये

ह ठाठ है॥ षड्ज सम रहता है रिषभ उतरा गंधार उ

४

तरा मध्यम उतरा कही चड़ा भी पंचम सम रहता धैवत

उतरा निषाद उतरा ॥ अथ सरगम: ॥ ध प प ग ग रे

म प प ध मा नि नि ध ध प प म ग ग रे सा ॥ इति स्थायी ॥

म म प प प ध मा मा मा नी नी मा ग रे मा मा म प नी ध प ॥

इति अंतरा ॥ इति सरगम: ॥ अब इसकी गत कहिते

है ॥ मसीत खानी । अबुर्द । ढ़िड ढ़ा ढ़िड ढ़ा डा ढ़ा ।

गे० रा०
५

पै म प पै नि प पै म ग रे ग रे सां

ड्डा डा ढिड ड्डा ढिड ड्डा डा ड्डा ड्डा डा ढिड ड्डा ढिड ड्डाडा

नि सां रे ग रे सां नि सां

ड्डाड्डाडा ढिड ड्डा ढिड ड्डा डा ड्डा ड्डाडा ॥ इति स्थायी

२प २पे २म २ग २रे

अंतरा ॥ यस्य आलापः ॥ ननरी इना आनन उनन ।

२रे २म २पे २म २पे २प २प २नि २सं २रे २सं

उआ नन अद ननरी तने नना उननना आनरा नन

२नि २प २पे २म २प २पे २सं

न रन नातम ॥ इति स्थायी ॥ ननन अदनते आन

२रे २सं २नि २प २रे २सं २रे २नि २प

न तम नातनै नना तन नरी नना आन नान ततम

२नि २धै २म २ग २रे २धै २म २ग २रे १नि

नन्त नरीन नानुरी रना नेना आन नान आन नान ता

२सै

न न्तनम ॥ इति श्रेतरा ॥ इति अलापः ॥ राग गंधार

6

अथ केदारि रागिनी ब्रह्म परिच्छेद मा

ह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ कल्प कोटि

जागि त्यागि सकल विकल मनतर

ग अंग प्राथ रोथ प्राण घोष अनंत।

तानी ॥ इति अस्थायी ॥ नियम यम अ

आसन हठ प्राण यमन प्रति अहरण

रा.के.

ध्यान युक्त धारणादि सह समाधि ठानी

इति ग्रंतरा ॥ इक अलख रूप रहे सब

हे जगत प्रलय जबी सत्य नित्य शुद्ध

बुद्ध निर्गुण अन मानी ॥ ध्यानी जब।

येहि कला विकल जगत लीन भयो वा

लनियी एक एव आतिहि स्वावदजानी

केदारि रागिनी ध्रुपद बल ताल चार ॥

योगि आप्प योगि राज नाम योग युक्त

रहे सदा अलष अलष कर्म योग यारै ॥

इति अस्थायी ॥ धौति नेति वस्ति अपरचा

टिक युत नौलिकादि गोप्य भाति येहि

षटक कर्म योग मारै ॥ इति अंतरा ॥ या

रा.के. रै प्रभ परम जोत सोई ठाक सेत जनन।

नेमन करै वालनिथी बुद्धि ममसु थारै

निज मारग ज्ञान ध्यान करुणा कर प

रे ब्रह्म परम धाम रूप भये लहे सुवा।

सुपारै ।। इत्याभोगः ।। इति केदारि रा

गिनी ब्रह्म परि छेदः ।। ❖ ।। ❖

२२

२

अथ केदारि रागिनी शक्ति परिछेदमा

ह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ विश्वमाया अ

तिहिं अबल निबल देव पुंज करै हरै

बुद्धि शुद्धि सकल विकल करण मा

री ॥ इति अस्थायी ॥ परमेष्ठी वत्सहरे

इंद्र मेघ वर्षकरे जसमति शिशुबंध

रा.के.

कह्यो थह्यो उघल भारी ॥ इतियेनरा ॥

डर्वासा अति यार दर्शन हित ब्रज हिं

गयो यमुना तट बाल केलि कला या

री ॥ कर्ष लिप्यो चक्र केश नंद तनय

नाहि ईश विहस आइ गोद मशाक ह्

प करैषे कारी ॥ मुख प्रविष्ट प्रलय ।

द्वि जनन मरण दोष देष अत्यद्भुत अमि

न फिहो परम भीति वारी ॥ यमी पर

मेश्वरि के चरण कंज मंज वाल भाल

धार नमन करै जगत मोह वारी ॥

इत्याभोगः ॥ केदारि रागिनी ध्रुवप-

द प्राकि ताल चार ॥ जगत करण।

गा.के. सार यार चित्र कार्य करिणि भरिणि ह

रिणि धरिणि धरिणि विश्व रूप चरणी

इति अस्थायी ॥ नाना विध रूपरंग भि

न्न ढंग जीव विविध कर्म करैं भ्रममति

युत पैसि भूलि करणी ॥ इति अंतरा ॥

पुरुष भूलि मरत रहे जब लग जग ।

श्रेत होई तब लग ही बासन के श्राम।
न मळे सरणी ॥ परम धवल शाक्ति भ
क्ति बालनिथी मनहिं थरें चरण पार
ण थारि पीर हरै श्रवन दरणी ॥ ❖ ।
इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति केदारि रागिनी
शाक्ति परिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖

ग.के.

२४

3

अथ केदारि रागिनी गणेशपरिछेदः

माह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ ढुंडिराज

गुंडि मुंडि भाव भक्त चारैं वारैं विघन

पुंज रद एक धारैं ॥ इति अस्थायी ॥

भाल तिलक मालगल ललितमोद्के

मोद्के मनिन मन सन्मान कारैं ॥ इ

रा॰के॰ तिप्रेतरा॥ चत हस्त प्रति मस्त प्रभगा

त मृड भात लात गिरजा हाथ गरे हार

मारै॥प्रियतात उर लात मदित बद॰

न नीके जीके काम दीजे बालनिय॰

सदा चारैं॥इत्याभोगः॥केदारि रागि

नी ध्रुवपद गणेजी ताल चार॥इति

नीके छवि भांत इंड मेघ मथ मातु कि

रण प्रकट कारि शुभ शोभि यारी ॥

इति प्रस्थायी ॥ हिम गिरिवर तनया

स तनयो ज भयो जगति जग विघ्न

भग्नो ब्रि सवरी उदारी ॥ इति अंतरा ॥

स्तट सिद्ध निज भक्त यारी सयारी ॥

रा॰के॰

२६

रि पुंज जित मंज जारी विहारी ॥ गण

नाथ कहे गाय बल निधहिं रुपि दा

न अन मान देइ आज भजो पाद मारी

इत्याभोगः ॥ इति केदारि रागिनी रा

गेशापरिच्छेदः ॥ ः ॥ ५ ॥

अथ केदारि रागिनी विस्नु परिछेदमा

हा।। ध्रुवपद ताल चार।। परम शांत सा

त्वत ग्रभ्र भक्त जनन मान परम धर्म

कर्म अपर त्यागि जागि भजो विस्नु:

इति अस्थायी।। सर्व पाप छीन होत वा

मन युत ज्ञात ध्यात अचल जोत रूप।

रा.के.

हिये प्रकट करण पिसुः॥ इति श्वेतरा॥ सा

मीपक एकलोक एक रूप पुन प्रभेद ले

त पुरुष भेद चारि ईस्मित पद जिसुः ॥

दीन बंधु भक्तवछल चरण कमल वि

मल हिये बालनिधी ध्यान धरे दर्श हरि

करिसुः॥ इत्याभोगः॥ केदारि रागिनी

ध्रुवपद बिलः ताल चार॥ मकरा कृत

कुंडल मधु सोविम शोभ सोविहिं थेरैं।

हाटक को मुकुट भ्रकुटि विरि चंदन।

धारी॥ इति ध्रुवस्थायी॥ पीत वसन हेम

रसन श्रोणि देश धार रहो भार भूमि।

हरण चतर भक्त पीर हारी॥ इत्यंतरा।

रा॰के॰ २८

गरुड श्रेम चढो जात भात मंदिर प्रणाम वर्ण ध्वज वैनतेय धारि पाप सारी ॥ शंख गदा कंज चक्र चक्र चक्र भ्रमर हनन करण सारि शास्त्र धरै करै कार्य्यभारी ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति केदारि रागिनी विलपरिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖

अथ केदारि रागिनी शिव परिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ अति विरूप काल

रुद्र ज्वलन शिखा जटा धरै वियति व

मन निरत करै शूल प्रेम धारै ॥ इति श्र

स्थायी ॥ भस्मधारि मुंडमालि भालनेत्र

कर उजारि देत विश्व मगारि अट्टहास।

रा॰के॰ कारै ॥ इतिअंतरा ॥ हरि सब भगण भग
ण प्रभा जरत पतित होत लीन जात दे
व पुंज गुंज गज उजारै ॥ मूल प्रोत प्रेम
थरै भीषण माव देहु भरै थरै थीर बाल
नियै अरिन उरम फारै ॥ इत्याभोगः ॥
केदारि रागिनी ध्रुवपद शिवजी ताल

२सं २म २प २ध २प २म २प

चार ।। हर गंगाधरण भरण इंड किरण

२ध २नि २ध २प २म २प २ग २रे २सं

शिखर करण संवरण गत डःख हरण ।

२सं २प २म २प २ग २सं २म

चरण जास जगरे ।। इति ग्रस्थायी ।। दश

२प २ध २नि २सं २नि २ध २सं २रे २सं २नि २ध

केयर शिव मंदिर बैठि कठिन स तप

२नि २ध २प २ध २प २म २ग

तप्यो विंशति भुज प्रबल कीयो राय

२म २प २ग २सं २सं २म २प

लेक नगरे ।। इतिश्रंतरा ।। चारणासर श

रा॰के॰ भ भक्त सक्त दोव लोचन पत जेगत ना॰

ध ध्यापति से क्लेश हरे सगरे ॥ तोषण॰

हित न्टत्य कीन बाणासर प्रति प्रबीण

सहस भजा दीनते से क्लम सेग फगरे

इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति केदारि रागिनी

शिव परि छेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ केदारि रागिनी सूर्यपरिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ सूर्य शरण धार ।

भार हरो पाप तीन काल बैथन कर शा

त मध्य माये तनि सेथ्या ॥ इत्यास्थायी ।

भाव तेज मनहिं धरो वरहिं सकल ।

दूर करो बुद्धि शुद्धि प्रेर करे हटे सक

रा॰के॰

ल निंधा ॥ इतिश्रेतरा ॥ यांहि तेज थार

ण तें प्राण होत जगत मोहज गायन

कों करड महत तनय देत वेथा ॥ हृष्ण

देव दर्श देव हर्ष होत वालनिये केरे

बुद्धि विशाद डरम चरण केज वेधा ॥

इत्याभोगः ॥ केदारि रागिनी ध्रुवपद

ताल चार ।। परम जोत दिवामणी रक्त

केज विकच वदन कुंद रदन मंदहस

न पीतवसन धारी ।। चारी जग सदा

रहें विहित प्रभा तिमर हरति शरण

गत रक्ष करणि धरणि देव भारी ।। इत्ते

तरा ।। जाके रथ पादन की धुनहि स

रा॰के॰ नत मध्य दिवस ऋषिहिं वेद पाठ पठ
न पाटन को मारी ॥ नूतन निज शाखे
करी माध्यंदिन नाम जाम यजुर्वेदि बा
लनिधी नमो पद उचारी ॥ इत्या भोगः
इति केदारि रागिनी ह्रदये परिछेदः ॥

अथ केदारि रागिनी दशावतारपरिछेद

माह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ निराकार भ

कवछल असुर पीर भीर देष भेष धरै

विविधभांत करै कार्य सगरे ॥ इतिश्र

स्थायी ॥ मत्सरूपि मोह हरयो मत्सबत

अबिध तरयो धरयो पीठ कमठ शिवधरि

रा॰के॰

रदन धस्यो जगारे ॥ इत्यंतरा ॥ विभफारि
रव्व करी प्रह्लाद बाल भक्त वामन पाव
न जग भार हस्यो भग्गुरे ॥ दशा केयरह
नन कारि राम धनुष धारि भये स्ववल
बुद्ध कल्कि बाल हरे भा र नगारे ॥ ॥
इति केदारि रागिनी दशावतारपरिछेदः

अथ केदारि रागिनी ब्रह्मपरिच्छेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ कल्प काल जागि

त्यागि सकल विकल मन तरंग भंग ।

धोय रोय आण जीव सनत जानी ॥

इति अस्थायी ॥ नियम यम स आसन

हढ आण यमन प्रति स हर्ण ध्यान ।

ग.के.

२८

शुक धारणादि सह समाधि ठानी ॥ इत्ये
नरा ॥ इक अलख रूप रहे सु वहे जग
त्र घलय जवी सत्य नित्य शुद्ध बुद्ध नि
र्गुण अन मानी ॥ ध्यानी येहि कला वि
कल जगत् लीन भयो बालनिधी एक
एव अतिहि खावद जानी ॥ इत्याभोगः।

केदारि रागिनी ध्रुवपद ब्रल ताल ४

१नि २प १प १नि २सं २ग २म २ग २रे २सं १नि २सं २ग २म २प

योगि प्राप्य योगि राज नाम योग युक्त

२नि २प २नि २प २म २ग २म २ग २रे २सं २सं २प २म २प

रहें कहें सदा अलाव अलाव कर्म योग

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं

यावें ॥ इतस्थायी ॥ धौति नेति वस्ति ।

२रे २सं २नि २सं २नि २प २नि २प २म

अपर त्राटिक अत नौलिकादि गोपिभा

२ग २रे २सं २सं २प २म २प २ग २रे २सं

ति येहि षटक कर्म योग मावें ॥ इत्यंत

रा॰के

२५

२नि २सं २ग २म २पं २म २पं २नि २प

रा।। थारै धुन परम जोत सोई ठाक सेत।

२नि २पं २म २ग २रे २सं २सं २पं २म

जनन नमन करै बालनिधी बुद्धि मम

२पं २ग २रे २सं २म २पं २नि २सं २रे २सं २नि २सं

सुधारै।। निज मारग ग्यान ध्यान करुणा

३ग ३म ३ग ३सं २नि २पं २म २ग २सं २सं २पं

कर परब्रह्म परमधाम रूप भये लहे।

२म २पं २ग २रे २सं

सुख अपारै।। ❖।। इत्याभोगः।। ❖।।

इति केदारि रागिनी ब्रह्म परि छेदः।।

अथ केदारि रागिनी शाक्तिपरिच्छेदमा

२नि २सं २ग २म २प

ह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ विभमाया अ

२म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २प २नि २ध २नि २प २म

निहिं प्रबल निबल देव प्रेज करै हरै

२ग २म २ग २रे २सं २सं २प २म २प २ग २रे २सं

बुद्धि शुद्धि सकल विकल करण सारी

२ग २प २नि २सं २रे २सं २नि २सं

इत्यस्थायी ॥ परमेष्ठी वत्सहरे इंद्रमेघ

२नि २ध २नि २प २म २ग २म २ग २रे २सं २सं

वर्ष करे जम मति शिशुवंय कह्यो थ

रा॰के

२६

२पृ २म २पृ २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म
होउ षल भारी ॥ इति श्रेतरा ॥ उंबीसा श्रोति

२पृ २म २पृ २नि २ध २ध २नि २पृ २म २ग
धार दर्शन हित ब्रज हिं गायो जमना त

२म २ग २रे २सं २सं २पृ २म २पृ २ग २रे २सं २ग २म
ट प्रकट बाल केलि कला धारी ॥ पेकलि

२पृ २नि ३सं २नि ३सं २नि २ध २नि २पृ
प्यो चक्र केश नेदत नय नाहि ईश विह

२म २ग २रे २सं २सं २पृ २म २पृ २ग २रे २सं
म ध्याइ गोद मशाक हूप ऋषै कारी ॥

२नि २सं २ग २म २पृ २म २पृ २नि २ध
माव प्रविष्ट प्रलय हुवि जनन मरण दे

ष देष अत्यद्भुत भ्रमित फिरो परम प्रीति

बारी ॥ ऐसी परमेश्वरि के चरण कंज

मंज बाल भाल धार नमन करै जगत

मोह वारी ॥ इत्याभोगः ॥ केदारि रागि

नी ध्रुवपद शाकि ताल चार ॥ जगत क

रण मार धार विचकार्य कारिणि भरि

गा· के·

२नि २पि २म २ग २म २ग २रे २सा २सा २पि २म २पि २ग

णि हरिणि थरिणि थरिणि विश्व रूप व

२रे २सा २ग २म २पि २नि २सा

रणी॥ इत्यस्थायी॥ नानाविध रूप रंग

२नि २सा २नि २ध २नि २पि २म २ग २म २ग

भिन्न ढंग जीव विविध कर्म करैं भ्रम

२रे २सा २सा २पि २म २पि २ग २रे २सा

ति युत पैसि भूलि करणी॥ इत्यंतरा॥

२नि २सा २ग २म २पि २ध २पि २म २पि २नि २ध

पुरुष भूलि मरत रहे जबलग जग मे

२नि २पि २म २ग २म २ग २रे २सा २सा २पि

त होई तब लग ही वामन के शामन

२०

मई मरणी ॥ परम प्रबल शक्ति भक्ति

बालनिधी मन हिं यरैं चरण धारि।

पीर हरै प्ररन दरणी॥ इत्याभोगः॥

इति केदारि रागिनी शक्ति परिक्षे।

दः॥ ॥ ॥ ॥

रा·के·

२८

३

अथ रागिनी केदारि गणेशपरिछेदमा

ह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ ढुंडिराज गुंडि

खेड सुख भक्त वारैं वारैं विघ्न पुंज रद

एक धारैं ॥ ऊनास्थायी ॥ भाल तिलक

माल गल ललित सोहै सोहै मुनिन म

न सन्मान कारैं ॥ इत्यंतरा ॥ वक्रहस्त

२प २म २प नि २प २नि २प २म २ग

ग.के. घ्रतिमल शुभगात म्हड भान लात गिर।

२म २ग २रे २स २स २प २म २ग २रे २स २ग २म २प २नि ३स

जा हाथ गरे हार मोरै ॥ प्रिय नात उरला

२नि ३स २नि २प २नि २प २म २ग २म

त मुदित वदन नीके जीके कामदीजो

२ग २रे २स २स २प २म २प २ग २रे २स

बालनिथ मदा चोरै ॥ इत्याभोगः ॥ के

दारि रागिनी ध्रुवपद गणेश ताल ष

२नि २स २ग २म २प २प २म २प २नि २प २नि

दतिनी के शुचिभांत ईड मेच मयमात्र

किरण प्रकट कारि भ्रम छोडि यारी ॥

इत्यस्थायी ॥ हिम गिरिवरि तनया सु त

न योज भयो जगति जग विघ्न भयोत्रि

सुचरी उदारी ॥ इत्यन्तरा ॥ क्रुद्ध सिद्ध

निज भक्त यारी सुखारी श्री पुंज निज

जारी विहारी ॥ गण नाथ कहे गाय ब

२सै २सै २नि २ध २नि २पे २म २ग २म २ग २रे २सै

रा·के· ललित हिं हयि दान अनमान देहे प्राज।

२सै २पे २म २पे २ग २रे २सै

भजो पाट मारी ॥ ·:· ॥ इत्याभोगः॥·:·।

इति केदारि रागिनी गणेश परिच्छेदः॥

अथ केदारि रागिनी विस्नुपरिछेदमाह

ध्रुवपद विस्नु ताल चार ॥ परम शांत

२नि २स २ग २म

सात्वत अभ भक्त जनन मान परम ध

२पे २प २पे २म २पे २नि २प २नि २पे

र्म कर्म अपर त्यागि जागि भजो वि

२म २ग २म २ग २रे २स २स २पे २म २पे २ग

स्नुः ॥ इत्यस्थायी ॥ सर्व पाप छीनहो

२रे २स २ग २म २पे २नि २स २रे

त वामन युत ऊंत घोत अवल जोत

२स २नि २स २नि २प २नि २पे २म २ग २म

ग·के·

३१

२ग २रे २सा २सा २प २म २प २ग २रे २सा

रूप हिये प्रकट करण थिसु:॥ इत्येतरा

२नि २सा २ग २म २प २म २प २नि २प २नि

सामीपक एक लोक एक रूप पुन स्र

२नि २प २म २ग २म २ग २रे २सा २सा २प २म २प

भेद लेत पुरुष भेद चारि ईप्सित पद

२ग २रे २सा २ग २म २प २नि २सा २रे २सा २नि

जिसु:॥ दीन बंधु भक्त वत्सल चरण

२सा २नि २प २नि २प २म २ग २म २ग २रे २सा

कमल विमल हिये वालनिधी ध्यानय

२सा २प २म २प २ग २रे २सा

रे दर्शो हरि करिसु:॥ इत्याभोगः॥ के

दारि रागिनी ध्रुवपद विस्तः ताल चार ॥

२नि २सं २ग २म २प २प २प २म २प २नि

मकरा कृत कुंडल मध श्रावण शोभ

२प २नि २प २म २ग २म २ग २रे २सं

मावहिं धरै हाटक को मुकट भृकुटि

२सं २प २म २प २ग २रे २सं २म २ग २प

विर चंदन धारी ॥ इतिस्थायी ॥ पीनव

२नि २सं २रे २सं २नि २सं २नि २प २नि २प

सन हेम रसन श्रोणिदेश धार रहो भा

२म २ग २म २ग २रे २सं २सं २प २म २प २ग २रे २सं

र भूमि हरण चतुर भक्त पीर हारी ॥

रा॰के॰ इत्यंतरा ॥ गरुड वेग वाहो जात भातम

दिर पणाम वर्ण ध्वजा वैनतेय धारि हारि

पाप भारी ॥ शंख गदा कंज चक्र वक्रव

क्र असुर हनन करण भारि शासु यरैक

रै कार्य्य भारी ॥ ❖ ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥

इति केदार रागिनी विष्णु परिछेदः ॥

अथ केदारि रागिनी शिवपरिछेदमाह

२नि २प २प २नि २म

ध्रुवपद ताल चार ॥ अति विरूप का

२ग २म २ग २रे २स २नि २स २ग २म २प २नि २प २म

ल रुद्र ज्वलन शिखा जटाधरै वियति

२ग २म २ग २रे २स २स २प २म २प २ग २रे २स

वसन निरत करै फूल प्रेम धारै ॥ इ

२ग २म २प २नि २स २रे २स २नि

त्यस्थायी ॥ भस्म धारि मुंडमाल भाल

२स २नि २प २नि २प २म २ग २म २ग २रे २स

नेत्र कर उजारि जारि देत विषमगारि

रा.के.

३३

आहृ हास कारैं ॥ इत्यंतरा ॥ हषि सषभ

गण भगण अभा जरत पतित होत ली

न जात देवपुंज गंज गाज उजारैं ॥ धू

ल अोत अेस थरै भीषण षावदेह भरै

थरै धीर बालनिये अरिन उरस फारैं।

इत्याभोगः ॥ केदारि रागिनी ध्रुवपद।

शिवजी ताल चार ॥ हर गंगा धरण भर

ण इंड किरण शिखर करण शरणागत

दुःख हरण चरण जास नगारे ॥ इत्यास्था

यी ॥ दश कंधर शिव मंदिर बैठि कोटि।

न सतप तप्पा विंशति भुज प्रबल कीये।

राय लंक नगारे ॥ इत्यंतरा ॥ बाणासुर।

रा॰के॰ ३४

शंभ भक्त सकल देष लेषन पत जगत नाथ

थापति से लैशा हरे मगरे ॥ नोषण हित

न्टत्य कीन बाणासुर प्रति प्रवीण महम

भुजा दीनाति से कुसल मंग करारे ॥ इत्या

भोगः। ❖ । इति केदारि रागिनी शिव प

रि च्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ।

अथ केदारि रागिनी सूर्यपरिछेदमाह

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ सूर्य धारण

धार भार हरो पाप तीन काल बंधन।

कर धात मध्य साये तनि संध्या ॥ उ

दयायी ॥ भान तेज मनहिं धरो चर

हिं सकल दूर करो बुद्धि शुद्धि प्रेरको

रा॰के॰ हृटे सकल निंद्या ॥ अन्तरा ॥ याहि ते
ज यारण ते यारण होत जगत मोहन
गायन कौ अरु सहत ते नय देत वे
ध्या ॥ इष्ट देव दर्श देष हर्ष होत बा
लनिये कैरे बुद्धि विशाद उत्तम चरण॰
केज वेध्या ॥ आभोगः ॥ केदारि रागि

नी ध्रुवपद सूर्यजी ताल चार ।। परम जो
त दिवामणी रंक कंज विकच वदन ।
कुंद रदन मद दमन पीत वसन धारी
इत्यस्थायी ।। चारी जग सदा रहें विहि
त प्रभा तिमर हरति शरण गत रक्ष
करण धरणि देव भारी ।। इत्यंतरा ।।

रा॰के॰

३६

जोके ग्रंथ पाठनकी धुन हि सुनत म
ध्या दिवस ऋषहि वेद पाठ पठन पा
ठन को सारी ॥ नूतन निज भाव करी
माध्यंदिनि नाम जास युजर्वेद वालनि
थी नमो पद उचारी ॥ ❖ ॥ इत्याभोगः ॥
इति केदारि रागिनी द्वयं परिच्छेदः ॥ ❖ ॥

अथ केदारि रागिनी दशावतार परि-

२नि २सा

छेद माह ध्रुवपद ताल चार ॥ निरा-

२ग २म २प २प २म २प २नि २प २नि

कार भक्त वछल अमर पीर भीर देष

२प २म २ग २म २ग २रे २सा २सा २प २म २प २ग २रे

भेष धरै विविध भाँत करै कार्य्य सवा

२सा २ग २म २प २नि २सा २रे २सा

रे ॥ इत्यस्थायी ॥ मत्स्य रूपि माह हस्यो

२नि २सा २नि २प २नि २प २म २ग २म २ग

मत्स्यबन अब्धि तरयो धरयो पीठ कम

ग.के.

ढ शिखरि रदन यशो जगरे॥ इत्येतत्॥

विभकारि रक्षकरी प्रह्लाद बालभक्त

वामन पावन जग भार हरो भगरे॥

दशकंधर हनन कारि राम यत्रघ था

रि भय सबल बुद्ध कल्कि बाल हरे

भार नगरे॥ इति केदार दशावतारः॥

१ केदारी कांतिरसः

२ के॰ रागीनी धानर॰

३ के॰ मदननायक।

४ के॰ विशाख देवता।

५ के॰ अनुकूलनायका

के॰रा॰
१

ॐ अथ केदारी रागिनी प्रारंभः ॥ येह रागि
नी तानसैनने कही दीपक रागकी स्त्री क
यन करी है अरु संपूर्ण है और षाडव भी है
अरु भरतमतमें धैवत इसमें वर्जित क
रा है और संप्रदाय गुणीजनो के बीच रि
षभ कम लगाते हैं अरु इसका प्रेशान्या

१

स ग्रह स्वर मध्यम है अरु समय इसका अर्द्ध

रात्री कथन करी है और ऋतु इसका ग्रीष्म

कथन करा है ॥ श्लोक ॥ मध्यमांशग्रहन्या

सा । धैवतस्वरवर्जिता । अर्द्धरात्रमुनैर्गा

ने केदार्य्यः क्रियते बुधैः ॥ अथास्या केदा

री रागिनी प्रकीर्ण विधिः ॥ विहागषाक

रौयत्र श्यामस्वरविमिश्रितम् । केदारीजा
यतेतत्र शृंगाररसेप्रयुते ॥ जब विहागरा शे
करा श्यामकल्याण इनों के मिलाप में के
दारी रागिनी बनती है । और इसका शृंगार
रस है । अरु मध्यानायका है और इसका
अनुकूलनायका है और कें बीज है अरु इ

सका विस्नुर्देवता है और विस्नुहिऋषी है।

वृहतीछंद है ॥ अथ केदारी रागिनी साधने

ॐ अस्य श्रीकेदारी रागिनी मंत्रस्य विस्नुः

ऋषिः वृहतीछंदः विस्नुर्देवता कैंबीजे।

मनोवांछित सिद्धयर्थे केदारी रागिनी जपे

विनियोगः ॥ अथ केदारी रागिनी करन्यास।

के॰ग॰
२

मः॥ ॐ केंद्रेगुह्याभ्यां नमः॥ एवं हृदयादिन्या
सेनसर्वं कुर्यात्॥ अथ केदारी गौरी गौनी षोडशो
पचारैः संपूज्य॥ आवाहनं। आसनं। पाद्यं। अ
र्घ्यं। आचमनीयं। वस्त्रं। यज्ञोपवीतं। गंधं।
अक्षतं। पुष्पं। धूपं। दीपं कर्पूरदीपं। नैवेद्यं॰
तांबूलं। दक्षिणां। प्रदक्षिणां। पुनराचमनी

२

ये। मोक्षोगात्रणामे॥ इतिषोडशोपूजने। अ
थकेदारी रागिनी मंत्रः। ॐ कें केदार्य्यै नमः
इतिकेदारीमंत्रः। अथजपसंख्या। त्रयोदश
लक्षम् एकादशसहस्रंच॥ अथकेदारी
रागिनीध्यानम्॥ ॐ जटाढ्याना सितव
स्त्रधारिणी। तपस्विनीध्याननिमग्नचित्ता

के॰ रा॰
४

वेदाननाचंद्रद्युतेललाटे। यस्याः किदारीक
यितामुनींद्रैः॥ अथकेदारीरागिनीभाषा।
ध्यानम्॥ सीसजटासशि जोति छटा छ
वि छाज गंगतरंग गनि भारी॥ फनिसीस
कों ऊपर राजतहै तनु आछी बिराजति श्री
वत्रिपारी॥ जोगके आसन ध्यानधरे तें।

४

समाधि लागि हग अंबुज तारी ॥ नृप अनूप

भयो हरिवल्लभ रागकेदारिकी रीति विचारी॥

अथमध्यानायिकालक्षणम ॥ दोहरा ॥ प्र

गलभ वचना जानत हि वरनऊ केसवदा

स ॥ वचननमाहिं उरोहनो दिया दिषावै॥

त्रास ॥ अथ केदारी रागिनी अनुकूलनाय

के॰ रा॰
५

कलहनाम। दोहरा। प्रीतिकरै निज नारिसौं
पर नारिन प्रतिकूल॥ केशव मन वच करम
करि सौ कहिये अनुकूल॥ कवित्त॥ केहूँ॰
नहीं बिसरै निसि बासर भेद हसी म्रव वेद
उज्यारी॥ त्योंही दिपै अति नेह सौं देहकी॰
दीप कली सम दीपति न्यारी॥ तेरीये जोति

५

जैसे हिये भीतर आवत औरन राति अंध्यारी।
नैनन हूं अरु बैनन हूं तन हूं मन हूंको नहीं
अतिप्यारी ॥ अथ केदारी रागिनी पुंगनिरम-
लक्षणम् ॥ देहरो जीवन हूति वहै प्रभ है
सबरे जगको नित दैये ॥ आवत ज्यों अन उ
हमतें मुष त्यों उष दरव के कमपैये ॥ राज

के. रा
६

उग्रसेनराज करौ अब काहे को केसव काहू डरैये ॥ मारन हार उबारन हार सुतौ सब के सिर ऊपर हैये ॥ अथ केदारी रागिनी देवतामंत्रः ॥ ॐ नमो नारायणाय नमः ॐ ॥ ॐ पीतैः शंख गदाब्ज चक्र सहितैः सव्येभुजे रंकितैः वामैः पुस्तक दर्पनाग्र नलिनी।

६

6

ॐभानुस्पृशोविदधत । राजेतेगारुडाधिरूढम:

धिकं भक्त्यानुकंपासादं लक्ष्म्यार्द्धांकितम:

घनौमिववंदे श्रीवासुदेवविभवम ।। इतिकेदा

री रागिनी देवताध्यानम ।। अब केदारी रा

गिनी की येह ठाठ है ।। षड्ज सम रहताहै:

अरु इसमें ऋषभ निर्बल है और गंधार बडा है

के॰ रा॰ मध्यम उतरा और इसमें मध्यम चडा भी लग

ता है अरु धैवत भी चडा है एक मतमें वर्जित

है और निषाद भी चडा है ॥ अथ केदारी रागि

नी षाडव सदगामः ॥ ताल त्रा॥ मम पप धप २ निसाध

प निध पप म प म प गा सा ॥ इति स्थाई ॥ अ

थ अंतरा ॥ मम पप धध निनि सा नि सा म प

निसाधपनिनिधधधपममगगसा ॥ अबकीदा

दी रागिनी की गत शुद्ध सपूर्ण फरोजखा।

नी तालथीमा त्रिताला उठेगी दूसरी से म

थामबुला ॥ डाडा डाडा डाडा डिड डिड

डाड डाड डा। डाडाडाडा डिड डाडाडा।

डिड डिड डिड डा। डा डिड डिड डिड डाड

डाड डाड

के॰ ग॰ ८

ग म प म ग पं म प ग
डाड डाड डाड डाड डाड । डा डा डिड डिड

म ग रे सैं नि सैं
डिड डाडडाड डा डाड डाड डा ॥ इतिस्थाई

४

अथ अंतरा स्थाई बजाकर चलातालकी हू

नि सैं ग पं म पं म नि
मरीमें ॥ डाड डा डाडा डा डा डाडा डिड ।

प नि पं म प ग रे ग म
डिड डिड डाड डाड डा । डाडा डाड डाडाड

ग रे सैं नि सैं
डाडडाड डा डाड डाड डा ॥ फिरस्थाईके

८

पैहले अबुर्द में जा मिला इतिअंतरा ॥ इतिरा

२म
नः ॥ अथास्या केदारी रागिनी अलापः ननन

२पि २धु २नि २धु २ग २म २म २पि २म
री इना आनन उनन उआनन अदतनरी त

२ग २सं १नि २सं २म २ग
ने नना उननना आनरा ननन अदनते रनु

२सं २पि २म
नानुम ॥ इतिस्थाई ॥ अथअंतरा ॥ ननन अ

२ग २म २पि २नि २सं २नि २सं २ग
दनते आनन नुम नानैनै नना नन नरीनना

२प २प २म २ग २म २प २म
२सं २नि तनं नन् ननीन तानरी रेना नना २ग २सं
के॰ रा॰ त्रान नानं त्रान नान रान नन्नम ॥ अथ केदा
५
२ग २म
त्रीन नीन
री रागिनी ध्रुवपद गानमाह ॥ रागिनी केदा
१
री ब्रह्मस्तुतेः ध्रुवपद ताल ध ॥

५

क॰रा॰
१

ॐ अथ करणाट रागिनी आरंभः ॥ भरतमतानु

सार । येह रागिनी श्रीरागकी स्त्री है । और इस

का समय प्रातःकाल है । अरु इसका रूप शि

शर है ॥ श्लोक ॥ धैवतांशा ग्रहन्यासा धैवता

दिक मूर्छना प्रथमे प्रहरे गाने प्रस्याह्रस्व

प्रशस्यते ॥ अथ प्रकीर्णविधिः ॥ वेलावली

१

व षुल्लाखिा देवगिरी विमिश्रिता करणाटी जा
यते नव रसे वीरे प्रयुज्यते ॥ अरु जिसमें विला
वल षुकल और देवगिरी अरु विलावली एही
सभी रलन उसको करणाटी कहिते है । अरु ।
येह रागिनी संपूर्ण सात स्वरकी है अरु इसका
वीर रस है अरु स्वाधीन पतिका नायिका है अ

क॰रा॰
२

ह अनुकूल नायक है। अथान्यमतेन प्रकीर्ण

विधिः। पंचम अरु ललित बभास और गूज

री इनों के मिलाप में भी कर्णाटी बनती है॥

अरु इसका देवता ब्रह्मा है और नमह ऋषि

है अरु उष्मिक छंद है कोबीज है॥ अथ एक

रागनी रागिनी माधनम॥ ॐ अस्य श्री कर

२

णाटी रागिनी मंत्रस्य त्रमहूक्रषि रत्नुष्टुप्छं
दः ब्रह्मादेवता कोबीजे श्रीकरणाटी रागि
नी यथेष्ट सिद्धर्थे जपेविनियोगः ॥ अथ
करणाटी रागिनी करन्यासः ॥ ॐ कें श्रेगुष्ट
काभ्यांनमः ॥ एवं हृदयादिन्यासं सर्वे कु
र्यात् ॥ अथ करणाटी रागिनी षोडशाएज

क॰गा॰
२

नम॥ आवाहनं। आसनं। पाद्यं। अर्घ्यं। आचम
नीयं। वस्त्रं। यज्ञोपवीतं। गंधं। अक्षतं। पुष्पं
धूपं। दीपं। नैवेद्यं। दक्षिणां। प्रदक्षिणां। पुष्पां
जलिं। पुनराचमनीयम्॥ इति करणाटी रा
गिनी षोडशोपचार पूजनं सर्वं कुर्यात्॥
अथ करणाटी मंत्रः। ॐ कें करणाट्यै नमः

२

इति मंत्रः॥ अथ जप संख्या एकादशलक्षम

अष्टमहस्रंच॥ अथ करणाटी रागिनीध्या

नम॥ ॐकृपाणि नीद्रां गजदन्त पात्रे। सं

धारयेती सुभगा स्वरूपा। संस्तूयमाणा

सुरचारणौघैः। करणाट नामा महिषी

स्वरूपम॥ अथ भाषा ध्यानम॥ सवैया।

क॰रा॰ ४

हाथ में पावलई अन तीछन दांत के बासन कों कर लीनो ॥ सुंदर रूप अनूपम भामिनी नीलमणीन के भूषण कीनो ॥ सुर बारण किन्नर स्लाघ करें सिरीराग की रागिनी मेनक मानो ॥ रागिनी येह करणाटि कही रस वीर में मान करें मन भानो ॥ अथ

४

करणाटी रागिनी देवता मंत्रः॥ ॐ ब्रह्मणे।
नमः ॐ॥ अथ देवता ध्यानम्॥ ॐ ब्रह्माणंव
रुवर्णाभं। पीतवस्त्रै रलंकृतं। चतुर्भुजं।
चतुर्वक्त्रं स स्रुवं स्रुचि हस्तकम्॥ इतिध्या
नम्॥ अथ स्वाधीनपतिका नायिका लक्ष
णम्॥ सदा रूप गुण रीझ पिया जो के रहे।

क॰ प्र॰
५

प्रवीन ॥ स्वाधीना पतिका तिया बर्णत कवि
प्रबीन ॥ अथ अनुकूल नायक लक्षणम् । प्री
ति करै निजनारि सों परनारिन प्रतिकूल ॥
केशव मनवच कर्म कर सो कैहे अनुकूल ॥
अथ राधिकाजीको वीर रस लक्षणम् । कवि
त्त ॥ गति गज राजि माजि देहकी दीपति बा

५

जी हावराध भावराजी पैदा वल चालसौं ॥के

सोदास मेदहास ग्रसिकुव भटभिरें भेटभए

प्रतिभट भाले नव जालसौं ॥ लाज साज ॥

कुलकोनि सोचपोच भयभोनि भौहें धनुता

नि भानि लोचन विसालसौं ॥ प्रेमको क

वचकसि साहस सहाय कुलै जीनिरानिराए

क॰रा॰
६

6

आज मदन गोपालसें॥ अब करनाटी रागि
नी की येह ठाट कहीं है ॥ षड्ज सम रहता
है। अरु रेषभ उतरा है। और गंधार चढा है।
मधम उतरा और चढा भी लगता है। पंचम
सम रहता है। धेवत चढा है अरु निषाद भी
चढाही है॥ अथ करनाटी रागिनी मतरामः

६

सानिरेसारेगरेसामगामनिमगरेसा ॥ इतिस्थाई ॥ अथअंतरा ॥ मपमधनिसारेनिधमधमगरे ॥ अब करणाटी रागिनी की येह गत है।

डिड डा डिड डाडा डाडाडा। डिड डा डिड डाडाडाडा ॥ इतिअस्थाई ॥ अथअंतरा ॥ डिड डा डिड डाडाडाडाडा। डिड डा डिड डाडा

कु.गा.

७

डा डा डा ॥ अथास्या करणादी गागिनी अला

पः॥ ननरी इना आनन उनन उआनन अद

ननरी नने उननना आनरा ननन रन नानुम

इति अथस्याई॥ अथ अंतरा॥ ननन अदनने

आनन नुम नानुनै नना नन नरी नना आ॥

न नान नने नन नरीन नानरी रना नना॥

7

२ह्मे १नि २२ २ह्मे २२ २ह्मे
ह्मन नान ह्मन नान रान नान्नुम ॥ प्रथक्र
वपद गानमाह ॥ रागिनी करणाटी क्रव
पद ताल ४ ॥

8

अथ कर्णाटी रागिनी ब्रह्मपरिछेदमाह।

ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार॥ अलाव ऊपनि

ता खुद बुद्ध प्रभ पूरण नित अनित जग

त त्याग जाग करो पाद सेवा॥ इतिस्था

ई॥ जो को मनि सक्ति त्याग विपन वा

स धार भजें तजें कपट काम क्रोध मोह

क॰रा॰

सेत सेवा ॥ इति श्रेतरा ॥ जिन इच्छा त्याग

दई हंसप विष्ण ब्रमत जानत त्यद मैं सक

भये बुही रूप लेवा ॥ तिनके पग सेवन

की आशा धरै बालनिधी सुधीदान दीजै

जिंह ईशामन समेवा । इति आभोगः ॥

करणाटी रागिनी ध्रुवपद बन्ह ताल ध

परम आनंद मंद करण अपर जगत तारि

क मोद सदा सत्य चित प्रकाश योगगम्य

देवा ।। इतिस्थाई ।। उदर जीत अल्प भक्ष

निद्रा को त्याग जागि बिगत राग द्वेष ।

जनन आत्म निवै भेवा ।। इतिअंतरा ।। म

न्मथ गति उर्द्ध चार पद्मासन परम धार

२ग २रे २ग २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २प २ध २प

क·रा· मन तरंग रोक सकल विकल रूप सेवा।

२प २ध २नि २सं २रे २सं २रे २ग २म २रे २सं २ध

एकही जु रूप रहो कहो जात नाहि कहे

२प २ग २रे २ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

दीप ज्योति वात रहित अचल रूप लेवा

इत्याभोगः ॥ इति कर्णाटी रागिनी बल

परिच्छेदः ८ ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ ❖

अथ कर्णाटी रागिनी शक्तिपरिच्छेदमाह

१रे २ग २म २ग २रे २स

षट्पदी ताल चार ॥ रक्त बीज भक्ष क

२स २नि २ध २नि २रे २स २नि २स २ग

रणि हरणि भार भव अपार एक हाथ।

२रे २ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे २स

नर कपाल खड्ग पानि वरणी ॥ इति

२प २ध २नि २स २रे २स २नि २स २रे २ग

स्थाई ॥ अम्बर एक काय शोष बसनप

२म २ग २रे २स २ध २प २ग २रे २ग २म २प २ग २रे

हतम भयोलयो वरज रक्त गिरन मफ

क॰ग॰

ममवपु करणी ॥ इतिश्रेनरा ॥ मातृघास

छिन्न भिन्न रक्तपरी भूमि एह प्रकट भ

ये रक्तबीज व्याप्तभई धरणी ॥ देव भी

ति नाशन हित कालि महत वदन क

ह्यो पह्यो जिह्व रक्त सकल असुर पुंज॰

टरणी ॥ रक्त क्षीन रक्तबीज नाशदाव

देव पुंज परम मोद यारि कहें जैजै भयह

रणी ॥ दास दास बालनिधै सथीदान दी

नै नित अपर ऊाट त्याग जगत जननि

पद्यो शरणी ॥ इत्याभोगः ॥ करणाटी रा

गिनी ध्रुवपद शाकि ताल चार ॥ जैजैजै

जगत जनानि हनानि असुर सकल डाव

क॰ग

विविधभांत मोद करणि सैतन की प्यारी॰

इतिस्थाई ॥ शोभे ममल मूल चक्र बैठ

इष्ट धनुष हलन करन मोहज धार रही

ब्रह्म भुजा धारी ॥ इतिअंतरा ॥ सरद बि॰

शाद कंज मंजु आनन इति शोभि रही

गौरी वपु जात भई नयन तीन वारी ॥:

धार रही तीन जगत विगत पाप भक्तक
रणि बालनिथे रमन रमै सुरमति सुव
कारी । इत्याभोगः ॥ इतिकरणाटीरागि
नी शक्ति परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖

ཀ་ག་

5

अथ कल्याणटी रागिनी गणेशपरिछेद

२रे २ग २म

माह ध्रुवपद ताल चार ॥ हस्ति वदन

२ग २रे २म २नि २प २नि २रे २म २म

रदन विषाद एकही विराज रहो जैसें

२ग २रे २ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे

चन मचन मोहज इंड किरण दम-

२म २प २प २नि २म २रे

कै ॥ इतिस्थाई ॥ विघ्नन के घदन है

२म २रे २ग २म २ग २रे २म २प २प २ग २रे २ग

त लेत माव घमार कभी वक्र मुंडना

क॰रा॰ म जास सनत विज्ञ थमकैं ।। इति श्रेतरा॰
परम्ह तिरम थार भार हरण हेत संकट
युत उत श्रेकुश ग्रवर हाय सेत दैत चम
कैं ।। बालनिधी ग्रोरन गणन दमन क
रण चरण चरण चतर पञ्चामन ग्रयो
दैत बडर नहीं गमकैं ।। इति श्रीभोगः ।।

२रे

करणाटी रागिनी ध्रुवपद ताल चारा। विवि

२ग २म २ग २रे २सं २नि २प २नि २रे २सं

य ग्रमथ नाथन गण नाथ माथ नागजा

२सं २ग २रे २ग २म २प २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

त थारै भाव कारै निज भक्त जनन नीको

२प २प २नि २सं २रे २सं २रे

इतिस्थाई ॥ चतुर्भुज श्रकण वर्ण श्रेग

२ग २म २ग २रे २सं २प २प २ग २रे २ग २म २प

द युत शोभ रही पीतांबर जरी चमका।

२ग २रे २ग २म २ग २रे २सं २सं

हरत भक्त जीको ॥ इतिअंतरा ॥ कोम

क.रा.

ल कर करन अभय अपर हाथ वरहि देत
लेत परशु अंकुश पुन मूल शुभ विधी।
को ॥ ऋषियन को परम पूज्य गणपति
पग बाल विघ्न विघ्न कार्य्य साधन हित।
ध्यान नित सखी को ॥ इति आभोगः ॥ ❖

इति कर्णाटी रागिनी गणेश परिच्छेदः

अथ करणाटी रागिनी विलुपरिछेदमाह

ध्रुवपद विलुः ताल चार ।। मधु भंजन ह

रि अनंत अेक मोहज पोढ रहे उदर ली

न कौन विस्व ऊर्ण नाभि भेषी ।। इतिस्था

ई ।। जाके पग कंज मंज मईन नित क

रत रमा समन होत परम परम सरस॰

क॰रा॰ सरस पेषी ॥ अंतरा ॥ एक के अनेक देह

धारण की कर विचार नाभि सहृद अंबु

जतैं आत्मभू सुवेषी ॥ बला तन दोउमा

गा दल तहां पुरष मन शांत रूप वाम ।

मिथुन सृष्टि दृष्टि लेषी ॥ इत्याभोगः ॥

करणाटी रागिनी ध्रुवपद ताल चार ॥

नील कमल विमल विकच वदन मदा

न मान हरण धरण धीर भक्त जनन कैटभ

अरि देवा ॥ इतिस्थाई ॥ गौर गार श्रेष्ठ

क भुवि जरी जरत धार रहो मानो जि

भ भदर नील चपल चमक लेवा ॥

इतिअंतरा ॥ अति भगधि युक्त भक्त

क॰ग॰ लता कुसुम माल गौरे धौरे हौरे भ्रमर ह्व

ह्व भ्रमर मन समेवा ॥ कटि किंकिनि

हेम घटित कर कंकण वज्र खचित कं

थिनमके बाल बिघ शोभित हरि मेवा

इति आभोगः ॥ ❖ । इति करणाटी गीति

नी विलः परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ॥ ॥

ग्रथ करगामटी रागिनी शिवपरिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ सित विभूति धारि

इति जगत विषय सकल तजैं रामनाम

परम इष्ट ध्यान लावैं ॥ इतिस्थाई ॥ वी

रासन धारि धनुष बाण कर सियारि।

सिया बाम श्रेगा चारि लछन छत्र शिरः

क॰ गा॰

कुलावै ।। इति स्थेतरा ।। भरत शत्रु सूदन

दउ पास ब्यजन चामर कर सेवरहे हर

नु मदादि अति आनंद पावै ।। राजनके

महाराज परेवस रूपथरै करै सदा डर।

निवास उमापति रिझावै ।। इत्याभोगः

कल्याणठी रागिनी ध्रुवपद ताल चार ।।

विकृत व्यापि जगत तब्ब त्वरित त्याग ।
दीयो कीयो नेह ग्राम रूप देह विकल
वारी ॥ ताम्र वर्ण जटा जूट भस्म लिप्त ।
जिम्ब विषिम विषहि भत्त केंठ धयो ह
स्यो डः खभारी ॥ इति स्थाई ग्रंतरा ॥ नर
मेडन माल काल रुद्र रूप धार मार श्र।

क॰रा॰ के मंगरंजित नित हरत विघ्न सारी ॥ श्म

मशानन वास करत बिन मंगल सकल म

चरित तदपि भक्तबालनिधी प्रति मंग

ल कारी ॥ इति आभोगः ॥ इति करणाटी

रागिनी शिव परिच्छेदः ॥ कल्याणं ॥ ॥

अथ करणाटी रागिनी सूर्यपरिच्छेदमाह

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ बिरदंड आनंद

दियें जिहं दर्शन होत जबी प्रकृणाइ स

भाई धाइ लगाइ कैरें दध मंथन पंथन

एक चलें जग यायी ॥ इतिस्थाई ॥ मोर

चकोर पीहा पिक कुकट लाट सलाट।

क॰ग॰ मेरे फरिलायी पाइ पिया हरि ध्यान लगा

वत राग मानो हर्षायी ॥ इतिश्रुततरा ॥ भैर

व रामकली ललिता गुणि ध्यानन तान

कि तान घ्रलाई गैय्यन गीवन बेयु खुले

मट पावन चक्रवकी पति पायी ॥ मेदिर

मेदिर फाजबजे कहि शाव नरी डेडमी॰

गरनाइ रवि जोत कुं पूजित बालनिथीवि
थिया जग मो जिन ठेमि सहायी ॥ इत्या
भोगः ॥ उद्योतन द्योत करण तिमर हर
ण भरण भक्त मक्त रक्त वमन धार पूजै
नउमारी ॥ इतिस्थाई ॥ भानु हृदय पाठ
सपठ भूमि एह जानु नष्ट कर मे पुठवी

क॰रा॰

ति लिये दिये अर्घ भारी ॥ इति श्वेतरा ॥ रक्त

गंध कुसुम रक्त तंडुलादि द्रव्य युक्त मुक्त

करै विपति सकल विकल ताप हारी ॥

शत्रुन को हर करण ध्यान चरण जास।

चलै बालनिधी हिये धरै हरै अपन चारी

इति करणाटी रागिनी स्वर्य परिच्छेदः ॥

अथ विभास रागस्य ठुमरी ताल ।३। सोवराजीसे

नागे प्यारे जान । रतमाती परभात टीआया फू

ले करो छोवराान । प्रकट प्रकार करी छेकज

रा पी कलंक अपरान । इनमें फूट नहीं जिल

जी काई रंगीला जीनमरी आन ॥ विभास रा

गस्य ठुमरी ताल ।३। कवन वचन विलना व

वि॰रा
ठु॰

नेरे। उर्धोजे पद सेवन वीने कल्प जगामो ऊब
ना उरला वनेरे॥ जेोसुख ब्रह्मलोकमैं ना
ही सो ऊवरी सुख पावनेरे। सगरे ब्रजको
राज दीयोहै हमे लवि जोग पठा वनेरे॥ वि
भास रागाम्र ठुमरी ताल।२॥ हरि सुख मोरनी
रलीयो नवनै भवन नही भावनेरे॥ गावै ग

दरसै करै याकी सोव कवडून आवनरे ॥ विसा

स गाया सा दूसरी ताल ॥ ३ ॥ तेरीगत अपरंपार

अन अवेद जिन रचोहै अभेद अदजोति निरंज

न निराकार । जाकौ कोउन पायो पारे । निग

म गावै पारन पावै अलामबेउचरे । ध्यानधरे

जाको पंचानन श्रीपन जश अन अभै भक्त दातार

वि·रा·
ठु·

मन राम हृदय राम हृदय ध्यावेरे सोई। महा जप
करो रे वेहरि प्रसन्न होवेंगे। मन वच कर्मसों
याद करोरे ज्ञान करो भव पार परोरे। प्यारे रे क
रुणा सागर जिन पालो सब संसार रे ऐसे मधु
सूदन ध्यावोरे॥ विभास रागस्य ठुमरी ताल।३।
मोरे गली पाय फेरा जो हो मोरी गा-॥ इस्थायी

वढकर आप मोरे वालम लोक जाने अमरावढ़े-

विभास रागस्य ठुमरी ताल। ३। नई लगन हम

जानी रे। जोतम रसीयो वोली वोलो तमहूं ने

नारसयो नीहो ॥ विभास रागस्य ठुमरी ता-३

मैं गवैनें नहीं जईहूं राम ॥ जो मवने की वात

चलैहै तापर टौंना चलैहू राम ॥ विभास रा

वि॰रा॰
ठु
३

गस्य ठुमरी ताल ।३। कारीरे वदरीया राम कैसी उमड आई । सोवन कीरित आई पीया मिले वन याई । अरे वदरे घरवै आमन भावन विना सहना मेदिवाहो रामकैसी ॥ राग विभास ठुमरी ताल ।३। उमगी उमगी आवै गोरीया जी यारा हमारहो ॥ कहा कहे कछु वमन

ही मेरो तन कारो मन पीय राह मारहो ॥ क्र
स्नानेट रूकत नहीं रोके मोही लीयो हेस
हीय राह मारोहो ॥ इति विभास रागस्य ठुम
री समापनम् ॥

अथ विभास रागस्य लोरी लिख्यते ।२। लोरी ला
लको देहु माई कब की ठाढी ठाढी परवाऊ । कुन
किन कुन कार गाऊ बजाऊ अगर चंदन का झू
ला झुलाऊ । लाल कों देखो सखी सब लोरी
को । अगर चंदन का झूला झुलाऊ रेशम डोरी
बटो डोरी को झूलना । नवल हेदोरना माई झू

वि॰रा॰
ली॰

लासी गोकुलचंद। कंचनको दोयम गाडाये नग
न जडन बहुरंग। आनंद भये नंदजीके डुआरे से
रा नंद लियाई मालन। कमलकवरने जन्म ली
योहै नंद महर घर पालना। विभासरागसाज
गलछेदताल॥२॥ तेरो अटल रहीलो राज
पियारे मद मद आइ पीया जमजम नित नित

नवेन बैठके इन मिल काज। गाइन गुणीश्रो नेद
वहीनवा सभसभी भ्रन मिल करन जब बसद
रेग मिल गाऊ वजाऊ नोन नेहर मदीलरो
साज ॥ विभास रागस्य तताना ताल।३। दानी
उदे ताना दिरना दीम दिम ततानानानानाना
नानाना दीम दानी नादिर दिर ताम दिर दिरताम

वि॰ग॰ दिर दिर दीम नदर दानी। यालाली याली याला
लो॰ लोम याला लालाले लोम् यालाले लोम याला
ली याले दिर नोम नोम् ननाना नोम नानाना
नानानाना दिर दिम् ननाना दिम नान नाना
दानी विभासरागमादरा नाल २ बडोरवबीरव
धीर गाड लेकको मंगलन्मागावडोपनृषधारी पम

२

दल ग्रहमाह्रो जोधा वली लीपे एकाने एक बल अ
धिक भारी । सेस धरनी धसो सूर बादर छपिऊ
हाथ पैरवान लीपे पावारी । दोर वऊ और जब
मार लेका लई सकल संसार जैजै उकारी । जन
नवेली अकेली चली स्याम मधमाती लेगार जा
पे । गागर भर भर धर आवे मोरा कछूना बिसा

वि॰ रा॰
लो॰

ज पीआ सरूप सावरे ढोडो नैनननमें भरो । विभा
स रागटोना नाल । ३ ॥ टोना कामन कर सम
जावरे कारू देसना जावरे । जंत्र मंत्र डार सा
लीरी रूके नीको पीआ गर लावरे ॥ इति वि
भास रागस्य लोरी झूलना जगलबंद नराना
सादरा जत टोना समाप्तम् ॥

अथ विभास रागस्य कवित नाल ।३। सकल
सखिन कौहै सरूप धरी सौ नाक दोन दाहौं दास
नी हसनी वनी सी है । मोहनके मंडनके अधरान
कीसी रेष भ्रकुटी सवेष भाव भेद छवि छकीसी
है । चित्र वनराई उझकी सी उझकेसे अरूझ
व सझ चौंको नैन जैसे उझकीसी है ॥ केसोदा

वि॰रा॰
क॰

स ऊणकीसी माला प्रेमकीसी माला आजलौन
देखो सखि जैसी आज दीसी है । विभासरागस्य
कवित माला ३। चंचलनैन हठे नाथ अंबरा नक्ष
जै हाथ सोवैनै ऊखारिकाऊ सखकौ सखायो
जु । मंद करी दीपडारि बेदनाव देखियत
दोरिकै उपाई आऊ हारेतै दिखायोजु ॥ ॥

म्गराजमराल वाल वाहिरै विडारि देके भाग्यो नमेंह केशव सुमोह्न मन भायोजू । कुलके निवास प्रेम वचन विलास सुनि मेरगणो सुरतिहूते स्याम सुख पायोजू । विभासरागसकविन ताल ३ । इत उत चाहि देष्यो जव कोऊ फिरा नाहि वारवार जिय करौ छिये कहा भयोहै ।

वि.गृ.
कं

अवलोंनी देषतिहौ इहां कल्हुहूतो नही अवहे
ने देषियत उरउट नयोहै । रहसि रविलनराई
मोंने जेठभारी भई कियोयाने वाजुभयो मरा
वर दयोहै ॥ आंघनकी मेरी फाटत सी आव
तहै जाननहीं रीफ लागिकेघो झोकि गयोहै
विभास रागस्य कवित नाल ॥ ३ ॥ खावदै

सखीन बीच दैकै सौंहैं घायकै घवाय कछू खाइ
वर कोनी वसहै । कोमल मृनाल कासी मल
काकी माल कासी बालिका जराठी मौडिमान
स कि परहहै । जानैको विभान भयो केशव ह
नै को बान देखै आनि मान भयो कियौं ग्रह
है । चित्रसी जराघी यह चित्रनी विचित्र गतिक

२

वि·रा·
क·

ह्वैयौं रसिक नए यामै कौन रस है । विश्राम राग
सा कवित नाल ।२। प्रथम सकल सुचि मज्जन
अमल वास जावक सुदेस केस पास को सुधारि
वो । अंगराग भूषण विविध सुखवास राग
कज्जल कलित लोल लोचन निहारिवौ ॥ वो
लनि हसनि मदु चातुरी चलनि चाह पल पल

अति पति व्रत अति पारिवौ । केसोदास सवि
लास करइ उगरि राषे इहि विधि मोरह सिंगा
रनि सिंगारिवौ । विभास रागस्य कवित नं॰ १३।
केसवदास सविलास मंद हास जुत अवलोक
नि अलापनि कौं आनंद अपार है । बहिरनि
मान अरु अंतरनि मान अनि रति विपरीतिनि कौं

वि·रा
क·

विविधि विधा कहै। छूटि जाति लाज नहीं भूष
ण लहैस केस टूटि जात हार सब मिटत सिंगार
है। छूजि छूजि उठै रति छूजिजति खनघरामोई
नै लहति साबि श्रीक विवस्ना कहै। विभासराग
कवित नाल २ नान कौसो गान सब बल ब
ल वीर कौसो मान कौसो भाव नहीं मोहि

मन भायो है। थलसौं अबल सील अनल सेवल

चित जलसे अमल तेज तेज कौसौ गायो है। के

शोराम वसन अकासके अकास वोघ वर वरघ

टघट वेक यनौ क्षायो है। रति कौसी रतिनाथ

रूपरति नाथ कौसौ करौ केसौ राइ रूठ कौन

पति पायो है। विश्रास रामरसकवित नाल।३।

वि.रा
कं

5

देषी है गुपाल एक गोपिका अनूप रूप सोनेनेस
लोनी वास सौंधेने सवाई है । सोभाई सुभाई अव
नार लीनो घनस्याम कियौं यह दामिनीयौं का
मनी कै आई है । देवी कोई दानवी न मानवी न होय
ऐसी मानवी न हाव भाव भावनी भुलाई है । केसो
दास सब सुष साधन की सिद्ध यह मेरे जाने मैन

हौ सौ मैन काकी जाईहै । विभास रागास्य कवि
त नाल २ बोली कोसो पान नोहि करत संवारि
बोई दर्पन ज्यौं नोहो मोज मूरती समनीहै । नेरे
मनोरथ भगीरथ रथ्र पीछे पीछे डोलत गुपा
ल मेरो गंगा कोसो पानीहै । नेरो नित देव
नाथै पायो पति केसोराय पतिनी वडनपति

वि. रा.
क.

देवना वषानी हैं। ऐसी बातें कौन जन मानी ह
निमेरी रानी उनके नोनेरी बानी वेदकी सी वां
नी हैं। विभासरागकवित नाल।३। कैधौ रट
हकाज कैधौं कहूं ठौन सषा समाज कैधौं कछू
आज बनवा सर विभानतै। दीनोंजै नसौय कि
धौं काहूं सौ भयौ विरोध उपज्यो प्रबोध कि

यौ उर अवदानतें । हावे मैन देह कियौ मोह में
कपट नेह कियौ देषि मेह अति उरे अधिरानतें
कियौ मेरी धीन की अतीन लेन केशोराय अज
हेन आयमन ह्यौं कौन वानतें विभास राग
कविन नाल र वेदन विपट वड कोमल विम
ल दल ललित वलित लता लपटी लवंग की ।

वि॰रा
क॰

केशोदास नामै डरी दीपकी सिषासी दौरी डरा
वनि नील वास डारि अंग अंगकी । पौन पानि
पंछी पशु वासमै सबद सुनि जित तित चौंकि
चाहै चोप संगकी । नंदलाल आगम विलोकै
कुंजजाल वाल लीनी गति नरहिकाल पिंजर प
तंगकी इति विभासराग कवित समापतम ॥

अथ हिंदोल रागस्य दशावतार परिछेद मा

ह ध्रुवपद ताल चार ।४। परमेश्वर परमपु।

रुष परमधाम सदासत्य भक्तहेत लेत तनु

धर्म हानि लेषि ॥ इति अस्थायी ॥ मनुस्वयंभु

तारन हित मत्स्यरूप धारलियो कमठ भयो

सुधाकरी कोडभूमि पेषि ॥ इति अंतरा ॥

रा. हिं.

२स्रे २ग २म २ग २ग २म २ध २नि २ध २नि २ध २म

न्र हरि हेम किशिपु मार प्रह्लाद रछ करी

२ग २म २ग २स्रे २नि २ध म २ध २नि २स्रे

वामन वपुधार हरी भूमि त्रिपदि भेवि ॥

२ग २म २ध २नि २स्रे २नि २ध २म २ध २नि २ध २नि २ध २म

परशुराम भार हरो दशकंदर रामहन्यो ।

२ग २म २ध २नि २स्रे २नि २ध २म ग २म २ग २स्रे

सबल बुद्ध काल्कि बालनिधी मधि शोवि ।

इत्याभोगः ॥ ॥ इति हिंदोल रागस्य दशा

वतार परिछेदः ॥ ॥

कुसुम माल सर्वलिंग प्रीतिपूर्व अर्पितकी ।

उडहि भीलगरे परी शबराज रूप भारी ॥

चरण शरण जाय परो शंकर मद अखदी

यो पाय्य पतहै नाम जास शत्रुन गण मारी

बालनिधी दयानिधे चरण शरण धारहो

जग शंकर शंकर शिव नाम नित पुकारी

रा॰ हिं॰ इत्याभोगः॥ इति हिंदोल राग स्य शिव परि

च्छेदः॥ ॥ ॥ ॥

अथ हिंदोल रागस्य शिव परिछेद माह ध्रुव

पद ताल चार ।४। आशु तोष शंकर नित अ

मित देत भक्तवछल देवदेव गंगाशिखर वे

द भाल धारी ॥ इति अस्थायी ॥ ठक सभे अ

उतन [illegible] नगायावन याडगयो विविध भांत

बीन हने धनुष हाथ भारी ॥ अंतरा ॥ देखो

रा. हिं.

जब शूकर एक धाई परयो मारन हित तब नि
षाद बाण तज्यो तज्यो नृप हि मारी ॥ जबहि
मरयो तब विवाद समर घोर होत भयो त्रि
दिन भील प्रबल देष बाण नृप उचारी ॥ क
र प्रजन युद्ध करो हरयो मद तमा र सकल
तभी स्नान कियो पुनः पार्थिव वियकारी ॥

न्म भ्रम तिमर हरण काल रूप पाद पद्मनमें

भूप जोके भय हारी ॥ इतिअस्थायी ॥ अन

ण कोति पीत वसन चतुर्भुजा केज करण

धरण कीटमकुट सीसमकटक युगल धारी

इतिअंतरा ॥ जोको रथचक्र एक सम ष

ष थाइ चले कर प्रदक्ष सकल जगत ।

ग. हिं. दिवस रात्रि कारी ॥ ऐसे कहत करके चर-

ण साधन बालनिधी ऊरहि तिमर नाशकरो

हरो भ्रांति सारी ॥ ॥ इत्याभोगः ॥ ॥

इति हिंदोल रागस्य सूर्य्य परिछेदः ॥ ॥

अथ हिंदोल रागस्य सूर्यो परि छेदमाह ध्रु

२सा १नि १ध १नि २सा १नि १ध
वपद ताल चार। ४। सकल जगत तापन।

१म १ग १ग १म १ध १नि २सा १नि २सा २ग २म २ध
तेहि परम तेज अति प्रचंड तव मंडल वेद

२नि २ध २म २ग २म २ग २सा २ग
गीत अज्ञ गीत भारी ॥ इति अस्थायी ॥ उद

२म २ध २नि २सा २नि २ध २म २ध २नि २ध २ध
या चल दर्शन जब देत निकसत शिव हि

२नि २ध २म २ग २म २ध २नि २सा २नि
सकल विकल नयन कमल विमल जग।

रा. हिं.

5

प्रमोद भारी ॥ इति प्रनरा ॥ ब्रह्म ऋषि प्रति

होम दीन होत पूजे तव वेद चार पुनि हिं धार

मैत्र विथ उचारी ॥ अपर लोग निज विहार-

परम मुदित प्रगट करै मन वांछित एर य

रै ऐसो हित कारी ॥ इत्याभोगः ॥ राग हिंदो

ल ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ ४ ॥ सूर्य्य द्वादश

कुट सीस पीत बसन हसन दसन चमक दा

जैं ॥ इति प्रस्थायी ॥ प्रणाम मंदिर मेंडर मय

ूख किरण प्रकट भई देष रमा नयन युग

ल वर चकोर साजैं ॥ इति अंतरा ॥ उर विजे

ति माल तिलक भाल में विराज रहो कराहि

कटक युगल युगल अंगद युग भ्राजैं ॥ श्रो

रा. हिं. गलीय [illegible]लि मैं कटि किंकिनि शोभरही प

ग नृप[illegible] बालनिधी कोटि काम लाजैं ॥ ॥

[illegible]भोगः ॥ ॥ इति हिंदोल रागस्य विस्त

पारि छेदः ॥ ॥

6

अथ हिंदोल रागस्य विष्णु परिछेद माह ध्रुव

पद ताल चार।१। हरि हरि हरि रसन रसि

क नाम सदा रटति रहो जबलग छुट प्रान॥

बसत न सत पाप सगरे॥ इतिअस्थायी॥

अजा मिल कायाथव ध्रुव गजेंद्र अंबरीषव

व नरेंद्र गोपी गण तरे सहित सगरे॥ इति

ग.हिं. ग्रेतरा ।। काम युक्त रहित काम नाम जपत य

शपि कउ पाप पुंज सेवरहीत दरय होत बिगरे

जैसे जगबीत होत्र दरय करे स्नेह मात्र बाल

निधी बिस्तनाम कलि महाई जगरे ।। इत्या

भोगः ।। राग हिंदोल ध्रुवपद विस्नु ताल । धा

श्रुतसि कुसम सहश वर्ण कर्ण स्वर्ण भर्णम

भंजन मनरंजन खगिगंजन खवेकेदन ख

भ गानही ॥ इतिअस्थायी ॥ शंकर मन धो

कर अनि शंकर हिये ध्यान धरे परे नही।

भीर कभी एसो शिव नातही ॥ इतिअंतरा।

भाल तिलक भात जात मलय गिरी गवैमा

ल बालचंद कला शिखर अत उजल भात

रा. हिं.

२सं २ग २म २ध २नि ३सं २नि २ध म २ध २नि २ध नि ध म

ही ॥ दीन देत ऋद्ध सिद्ध बुद्धि वृद्धि बालनि ये

२ग २म २ध २नि ३सं २नि २ध २म २ग २म २ग २सं

दयानिधी चरण शरण निज दासन लालही

8

इत्याभोगः ॥ ॥ इति हिंदोल राग स्य गणेश

परिच्छेदः ॥ ॥ ॥

अथ हिंदोल रागस्य गणेश परिछेदमाह ध्रु

वपद ताल चार ।४। करी वदन एक रदन वि

घ्न कदन दया सदन कोटि मदन लाजित ।

जिह सखम घोभ पेखी ॥ इतिअस्थायी ॥

नाग जात वर्ण कर्ण पवन घुक्क वक्र तेड़ः

वेद भाल मालगरै धरै नाग भेखी ॥ इतिअं

रा-हिं·

नरा ॥ वारू वदनभंजा देत पहषु अभय वर
हि करै थै थै थीर धीर हरैं नाशे सभ देखी ॥
गणनायक चरण शरण बालनिधी थार र
हो एरी मनकाम सकल दया हाष्टि लेखी ॥
इत्याभोगः ॥ राग हिंदोल ध्रुवपद गणेश ता
ल चार ॥४॥ गिरजा को नंदन जग वंदन डाव

प्रकट जननी जिम विपति हरे थरे थीर तैसे

इतिप्रस्थायी ॥ पाप ताप शाप सकल हर

करत नीर जास भक्तपास करइ सिद्ध विविध

भांत तैसे ॥ इतिअंतरा ॥ अति पवित्र नीर स्वेत

शीकर कर शांतिकरे सदा रहे शुद्ध अटल ए

वे रूप जैसे ॥ पार वार पर्वत नह हमें बड्ड प्रका

२ध २नि २ध २म २ग २म २ध २नि २नि २सा २नि २ध २म २ग २म २ग २सा

रा॰ हिं॰ र सहत बालनियी वर सह पान विस्स लोक लैसे

हत्याभोग:॥२॥ इति हिंदोल राग स्य शाकिं॰

परिच्छेद:॥ ॰॥३॥

अथ हिंदोल रागस्य प्राकि परि छेद माह ध्रु

वपद ताल चार। ध। श्री गंगा गिरिश शिषर

भूषन जग हृषहरणि तरणि कलुष अब्धि।

गाढ पार कर्णि भारी ॥ इति अस्थायी ॥ जोको

जग दर्श पर्श पुरुष त्रिया प्रीति युक्त करें अ

द्व देह धरें हरें व्याधि भारी ॥ इति अन्तरा ॥

रा॰ हिं॰ बाल हनन मद्यपान हेम चौर्य्य गुरु तल्प इ
त्यादिक महापाप नाश भीति धारी ॥ बालनि
धी नेहै शारण दर्शन हित धार रहो पूरण नि
न कामकरो भक्तन की प्यारी ॥ इत्याभोगः ॥

राग हिंदोल ध्रुवपद शाक्ति ताल चार। ४ ॥
भागिरथि भाग जगत भासत नित भ्रमित।

जिन इच्छा धार कारि विविध विश्व न्यारी ।।

इति ब्रह्मायी ।। नाभिकमल ब्रह्मादिक ऋ

षि देव दनुज नाग पशु पक्षी पतत रत्न म

नु मनुष्य नारी ।। इति ब्रेतरा ।। विपत वा

यु अग्नि उदक भूमि नाम जात तरु त्रण

औषधि विविध भाँत नवाहि रूपसारी ।।

ग॰ हिं॰ बालनिधी हेम घटित भूषण मैं नामरूप मि
त्र वास्तव से हेम रहे जारी ।। इत्याभोगः ।।

इति हिंदोल राग स्य ख्याल परी छेदः ।।:।।

12

अथ हिंदोल रागस्य ब्रलपरि छेद माह ध्रुव

पद ताल चार ४ ॥ सदा सत्य नित्य शुद्ध विभु

व्यापक जग विगत माय भक्तभाय उरहि ।

कला ध्यानी ॥ इतिअस्थायी ॥ अति सुछम

अनहद नरव चेटावत बाजरहो वर मृणाल

उरण नेक सहश मनत ज्ञानी ॥ इतिअंतरा ॥

रा॰ हिं॰ अनत अनत आति बिबिध होत जात बिबिधभा

न शब्दब्रह्म रूप अनूप नार सार ठानी ॥ प्रा

ण पवन युक्त मुक्त रूपकरे हरे ध्यान सोहंप

द बाल निधी सुधी परे बानी ॥ इत्याभोगः ॥

राग हिंदोल ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार ४ ॥ः

शब्दब्रह्म निर्बिकार निराधार निर्गुण सत

13

हिं॰रा॰
१

ॐ अथ हिंदोल रागः प्रारंभः॥ संगीत दर्पण के मत मैं। इस कों दिन के प्रथम याम मैं गाना परंतु कलावंत लोक इस कों दिन के चतुर्थ याम मैं गाते है। श्लोक। षड्जांश गृह न्यासो रिप हीन स्तथो डवः हिंडोलः कथितो विज्ञै यामे गेयो तथा दिने॥ अब इस का अंश न्यास ग्रह स्वर षड्ज है।

१

और ऋषभ पंचम इस में वर्जित है और उडव-

जाति है अरु कहीं षाडव भी कहा है। सो ऋष

भ युक्त है॥ अथ प्रकीर्ण विधिः॥ वसंत को-

शिकौ यत्र पंचम श्चापि मिश्रितः। हिंडोला-

जायते तत्र रिप हीन स्तथो डवः॥ अर्थ। अरु

जब वसंत मालकौश और पंचम येह तीनो

हिं.रा.
२

मिलें तब हिंडोल होता है। अह इसकी बसंत ऋत है। और ब्रह्मा देवता है। अनुष्टुप् छंद है। ब्रह्मा ही ऋषी है। हिंबीज है॥ अथ हिंडोल रागस्य। माथनम॥ ॐ अस्या श्री हिंडोल राग मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि रनुष्टुप् छंदः ब्रह्मा देवता हिंबीजे श्री हिंडोल राग प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाः॥ ॥

२

अथ हिंडोल रागस्य न्यासः। ॐ ह्रिं श्रुंगुणाभ्यो नमः

एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात्॥ अथ पूजा वि

धाय॥ आवाहनं। आसनं। पाद्यं। अर्घ्यं। आचम

नीयं। वस्त्रं। यज्ञोपवीतं। गंधं। अक्षतं। पुष्पं।

धूपं। दीपं। नैवेद्यं। दक्षिणा। प्रदक्षिणा। पुनरा

चमनीयम्। इति हिंडोल रागस्य सर्वं पूजनं कुर्या

हिं॰ रा॰
१

न॥ अथ हिंडोल राग मंत्रः॥ ॐ हिं हिंडोलायनमः

इति मंत्रः॥ अथ हिंडोल रागस्य ध्यानम्। निते

विनी हुंडि[illegible] रंजितास्यो। दोला सुकेल्याः सुवि॰

मा द[illegible]ः। कपोल बिंब द्युतिमा दधानो। हिंडो

ल रागः कथितो मुनींद्रै॥ इति ध्यानम्। अथ भा

षाध्यानम्॥ फूलनि फूल फुला वति है रमिनी

२

कामिनी मम रूप लख्यो है। काम कुतूहलकेलि

करैं अति कंचन के अंग चीर गह्यो है। लौंनि ल

में डुलि [illegible]हकी सुंलषि कौतक लाज कपोत रह्यो

है। वीणा [illegible]ये कर में रस सों हरि वल्लभ गाग

हिंदोल [illegible] है॥ इति भाषा ध्यानम्॥ अथ जप

मेव्या। मम दशा लक्षम्॥ अथ देवता ध्यानम्।

ॐ ब्रह्मणे रक्त वर्णाभे। पीत वस्त्रैरलं कृते। चतुर्भुजे चन्द्र वर्के म स्कवे स्कवि हस्त कम॥ इति ध्याने

अथ मे[illegible] ब्रह्मणे नमः ॐ॥ अथ स्वकीयाना

यिका[illegible]णम्। दोहा। संपति विपति न मरण

हूं सर[illegible]। एक अनु हारि। ताहिं स्वकीया जानि

जो [illegible]न क्रम वचन विचारि॥ अथ अनुकूल ना

राव[illegible] लक्षणम । दोहा । प्रीति करै निजनारि सो
पर न[illegible]रिन प्रति कूल । केशव मन वच कर्म क
र मो[illegible]कैहि अनु कूल ॥ अथ शृंगार रस लक्षण
म ॥ स[illegible] केशव एक समैं हरि राधिका आ
सन एक [illegible]सैं रस भीने । आनंद सों तियाआन
न की दुति देखति दर्पण त्यौं दृग दीने । भाल

हिं॰रा॰
५

के लाल में बाल विलोकित ही भरिलालनि लोच
न लीने। सासन पाय सुवासनि सीय उजासन
में मानों आसन कीने॥ इति शृंगार रस लक्षणं।
अब हिंडोल राग का येह ठाठ है॥ षड्ज सम र
हना है। रिषभ इसमें वर्जित है। गंधार चडा है
मध्यम चडा है। पंचम भी इसमें वर्जित है। ये

वत किंचित उतरा । निषाद चडा है ॥ अथ सरगमः ना-२।

सा नि ध म ध सा नि ध म ग म ग सा ॥ इति अस्थाई ॥ सा

नि सा ध नि सा ग म नि ध म ग म ग सा ॥ इति अंतरा ।

अथ आभोगः । सा ग म नि ध म ग म ग सा ॥ अब हिंडो

ल राग की गत मसीत षानी नार थीमा तिताला

उठेगी ताल की पैली में येह कही है ॥ डिंड डा

हिं॰ रा॰ ६

२सं २ध २नि २सं । २ग २ग २म २नि २ध २नि २ध २म २ग २सं
डिंढ डा डा डा डा डा डा । डा डिंढ डा डा डा डा डा डा । डिंढ

१नि १ध २म २ध २नि २ध २नि । २ध २म २ग २म २ग २नि
डा डिंढ डा डा डा डा डा डा । डा डिंढ डा डा डा डा डा

२नि २सं २ध २नि
डा डा डा ॥ इति सम्याई ॥ अथ अंतरा ॥ डिंढ डा

२सं २ग २म । २ध २नि २सं २सं २नि २ध २ध २नि । २सं
डिंढ डा डा डा डा डा । डिंढ डा डिंढ डा डा डा डा डा

२म २ध २नि २सं २ग २ग १नि १ध २म
डिंढ डा डिंढ डा ढा डा डा ढा । डिंढ डा डिंढ डा ढा

२ग २सं २सं १नि
डा डा डा ॥ अथ हिंडोल रागस्य प्रलापः ॥ ननरी

६

२प २म २प २सं २नि २प २म २ग

ईना आनन उनन उआनन अुदतनरी तुने नना

२म २प २नि २सं २ग २सं

उननना आनरा ननन रनु नानुम॥ इतिस्थाई॥

२ग २म २प २नि २सं २नि २सं

अथअंतरा॥ ननन अुदनतु आनन नुम नानुने

२नि २प २म २ग २म २प २नि २सं २ग

नना नन नरी नना आंन नान ननुम ननु नरीन

२म २ग २सं २नि २प २ग २म २ग २सं

नानुरी र[illegible] नना आन नान आन नान रान ना

२सं

नुम॥ अथ गानमाह॥ राग हिंडोल ध्रुवपद।

हिं· रा·
१

1

१